RNI.No. — GUJHIN/2012/45192

सूरत भूमि

हिन्दी दैनिक

संपादक : संजय आर. मिश्रा

श्री 1008 महामंडलेश्वर
श्री स्वामी रामानंद दासजी महाराज
श्री रामानंद दास अन्नक्षेत्र सेवा ट्रस्ट, तपोवन आश्रम

स्व. पं. पू.1008 श्री रामानन्द जी
तपोवन मंदिर, मोरा गांव, सूरत

वर्ष-12 अंक:237 ता. 08 मार्च 2024, शुक्रवार , कार्यालय:114, न्यु प्रियंका टाउनशीप अपार्टमेंट, डिंडोली, डिंडोली, उधना सूरत (गुजरात) मो. 9327667842, 9825646069 पृष्ठ: 8 कीमत: 2:00 रुपये

ho@suratbhumi.com /Suratbhumi.com /Suratbhumi /Suratbhumi /Suratbhumi /Suratbhumi

पहला कॉलम

महाशिवरात्रि पर केदारनाथ धाम के कपाट 10 मई को खुलेंगे

देहरादून । उत्तराखंड में केदारनाथ के रावल भीमाशंकर के मार्गदर्शन में केदारनाथ धाम के कपाट 10 मई को सुबह 7 बजे भक्तों के लिए खोल दिए जाएंगे। महाशिवरात्रि के पावन अवसर पर आज शुक्रवार को पंचकेदार गद्दीस्थल ओंकारेश्वर मंदिर में केदारनाथ धाम के कपाट खोलने की तिथि पंचांग गणना से तय कर घोषित की गई है। तिथि तय होने के साथ ही बाबा केदार की पंचमुखी भोगमूर्ति के चल उत्सव डोली में विराजमान होकर शीतकालीन गद्दीस्थल ओंकारेश्वर मंदिर से अपने धाम के लिए प्रस्थान का दिन भी तय हुआ है। बदरीनाथ केदारनाथ मंदिर समिति के मीडिया प्रभारी डां हरीश चंद्र गौड़ ने बताया कि 8 मार्च को महाशिवरात्रि पर्व पर ओंकारेश्वर मंदिर ऊखीमठ में सुबह नौ बजे से धार्मिक अनुष्ठान शुरू हुए। बदरीनाथ केदारनाथ मंदिर समिति के अध्यक्ष अजेंद्र अजय की मौजूदगी में केदारनाथ के रावल भीमाशंकर के मार्गदर्शन में केदारनाथ धाम के कपाट खोलने की तिथि घोषित की गयी है।

'हर हर महादेव' के जयघोष से गूंजे शिवालय, सोमनाथ मंदिर भक्तों के लिए 42 घंटे खुला रहेगा

अहमदाबाद . महाशिवरात्रि भगवान शिव की पूजा का विशेष दिन है। आज देशभर में शिवभक्तों द्वारा धूमधाम से महाशिवरात्रि मनाई जा रही है। गिर सोमनाथ जिले के प्रथम ज्योतिर्लिंग यानी सोमनाथ महादेव मंदिर में महाशिवरात्रि पर्व के अवसर शिव भक्तों का तांता लगा हुआ है। बता दें कि महाशिवरात्रि के दिन सोमनाथ मंदिर 42 घंटे तक भक्तों के लिए खुला रहेगा. महाशिवरात्रि के मौके पर सोमनाथ मंदिर में बड़ी संख्या में श्रद्धालु उमड़ रहे हैं. सुबह से ही मंदिर के बाहर भक्तों की लंबी कतार लगी है. सोमनाथ में हर तरफ हर हर महादेव, जय सोमनाथ, बम बम भोले की आवाजें सुनाई दे रही हैं। श्रद्धालु शांतिपूर्वक दर्शन कर सकें, इसके लिए महाशिवरात्रि के दिन मंदिर को 42 घंटे तक खुला रखने का निर्णय लिया गया है। सुबह 4 बजे जैसे ही मंदिर के कपाट खुले, पूरा प्रभास क्षेत्र जय सोमनाथ, हर हर महादेव के उद्घोष से गूंज उठा। महाशिवरात्रि के अवसर पर सुबह से ही सोमनाथ मंदिर में भक्तों की भीड़ उमड़ पड़ी। उस समय शिव भक्तों को किसी भी प्रकार की असुविधा न हो इसके लिए मंदिर ट्रस्ट और स्थानीय तंत्र की ओर से विशेष तैयारी की गई है. दर्शन, प्रसाद, पार्किंग, सुरक्षा व्यवस्था सहित समुचित व्यवस्था की गई है। आज महाशिवरात्रि के मौके पर पूरे गुजरात के शिव मंदिरों में भक्तों की भारी भीड़ देखी जा रही है.

महाशिवरात्रि पर राम नगरी पहुंचे लाखों शिव भक्त किया जलाभिषेक

अयोध्या। महाशिवरात्रि के पावन अवसर पर पूरे देश में लाखों शिव भक्त भगवान शंकर के शिवलिंग पर जलाभिषेक कर रहे हैं। प्रभु राम की नगरी अयोध्या में भी भक्तों ने भगवान शंकर के जयकारों से वातावरण को गुंजायमान किया है। प्रात: करीब 3:00 बजे से ही शिव भक्त सरयू में स्नान कर नागेश्वर नाथ मंदिर में भगवान शंकर के शिवलिंग पर जलाभिषेक करने पहुंचे हैं। महाशिवरात्रि के अवसर पर लाखों की संख्या में भक्ति भाव में सराबोर नजर आ रहे हैं. जय श्रीराम के उद्घोष के साथ बम-बम भोले के नारों से अयोध्या नगरी गुंजायमान है। महाशिवरात्रि के मौके पर नागेश्वर नाथ मंदिर में कतारबद्ध लाखों शिव भक्त भगवान शंकर के शिवलिंग पर जल चढ़ा रहे हैं। धार्मिक मान्यता अनुसार महाशिवरात्रि के अवसर पर भगवान शंकर और माता पार्वती की विधि विधान पूर्वक पूजा आराधना करने का विधान है। महाशिवरात्रि के दिन का शिव भक्त बड़ी बेसब्री से इंतजार करते हैं। इस दिन शिवालय में भगवान शंकर के शिवलिंग पर जलाभिषेक करना और मंगलकामना करने का विधान है। मंदिर के पुजारी कहते हैं कि महाशिवरात्रि के दिन भगवान शंकर की पूजा आराधना करने से जीवन में आने वाली तमाम परेशानियों से मुक्ति मिल जाती है। आज ही के दिन नागेश्वर नाथ मंदिर में भगवान शिव माता पार्वती के साथ वैवाहिक बंधन में बंधने जा रहे हैं। यहां महाशिवरात्रि के अवसर पर पूरे दिन धार्मिक अनुष्ठान चलेगा। देर रात नन्दी पर सवार भोलेनाथ बाबा की बारात रामनगरी भ्रमण पर निकलेगी। बारात का जगह-जगह भव्य स्वागत किया जाएगा। यही नहीं हल्दी चढ़ेगी और पूरी रश्मों-रिवाज का पालन करते हुए शिव मां पार्वती के साथ परिणय सूत्र में बंधेंगे। इससे पहले राम नगरी अयोध्या में सुबह से ही दर्शन-पूजन का दौर शुरू हो गया है। खास बात यह है कि आज दिन ही नहीं बल्कि पूरी रात भगवान का पट श्रद्धालुओं के लिए खुला रहेगा।

हिंडन एयरफोर्स स्टेशन पर राष्ट्रपति मुर्मु ने वायुसेना की चार युनिटों को किया सम्मानित

नई दिल्ली ।

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु हिंडन एयरफोर्स स्टेशन पर पहुंच चुकी हैं। यहां एयरफोर्स के जवानों ने उन्हें परेड कर सलामी दी। अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में राष्ट्रपति का आगमन एयरफोर्स स्टेशन पर हुआ है। हिंडन एयरफोर्स स्टेशन पर महिला दिवस पर राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने एयरफोर्स की चार यूनिटों को सम्मानित किया गया है। राष्ट्रपति एयरफोर्स के चार यूनिटों को सर्वोच्च सैन्य सम्मान से सम्मानित किया है। इन्हें राष्ट्रपति मानक और रंग से सम्मानित किया गया। यह सम्मान 25 वर्षों में सराहनीय सेवाओं के लिए दिया जाता है। जिन चार यूनिटों को सम्मान दिया जाता है। उसमें 45 स्क्वार्डन, 221 स्क्वार्डन, 11 बेस रिपेयर डिपो और 509 सिग्नल यूनिट शामिल हैं। चारों यूनिट की ओर से ग्रुप कैप्टन एम सुरेंद्रन, ग्रुप कैप्टन शुभांकन, एयर आफिसर कमांडिंग आशुतोष वैद्य और कमांडिंग आफिसर ग्रुप कैप्टन विवेक शर्मा उपस्थित रहे। आज के कार्यक्रम के लिए एयरचीफ मार्शल बीआर चौधरी, केंद्रीय राज्यमंत्री जनरल वीके सिंह और जतिन प्रसाद हिंडन एयरबेस पहुंच चुके हैं। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु पहली बार गाजियाबाद आईं हैं।

ऐसे में शहर के लोगों में भी उनके आने का उत्साह है। खासकर बच्चे उनके आने को लेकर उत्साहित हैं। हालांकि शहर के लोग उनकी झलक नहीं देख पाएंगे। साहिबाबाद कोतवाली क्षेत्र में हिंडन एयरफोर्स स्टेशन पर शुक्रवार को सम्मान समारोह में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु पहुंची हैं। अन्य कई वीवीआइपी और वीआइपी सेना के अधिकारी शामिल हैं, जिसके चलते इनकी सुरक्षा में पांच सौ से अधिक पुलिसकर्मी तैनात किए गए हैं। छतों पर पुलिसकर्मियों की ड्यूटी लगाई गई है। जो निगरानी करेंगे। दिल्ली से आने वाले रूट पर पुलिसकर्मियों को लगाया गया है। वाहन चालकों को परेशानी न हो यातायात पुलिसकर्मियों की ड्यूटी लगाई गई है। पुलिस उपायुक्त ट्रांस हिंडन निमिष पाटिल समेत 10 से अधिक अधिकारी भ्रमणशील हैं। पल-पल की गतिविधियों पर नजर बनाए हुए हैं।

सुधा मूर्ति राज्यसभा के लिए मनोनीत, मोदी ने दी बधाई

नई दिल्ली। इंफोसिस के संस्थापक नारायण मूर्ति की पत्नी एवं समाजसेवी सुधा मूर्ति को राज्यसभा के लिए राष्ट्रपति ने मनोनीत किया किया है। इस घोषणा के साथ ही प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सुधा मूर्ति को बधाई दी और उनके सफल संसदीय कार्यकाल के लिए मंगलकामना भी की है। दरअसल पीएम मोदी ने सोशल मीडिया पर पोस्ट करते हुए लिखा है कि 'मुझे खुशी है कि भारत के राष्ट्रपति ने श्रीमती सुधा मूर्ति को राज्यसभा के लिए नामांकित किया है। सामाजिक कार्यों, परोपकार और शिक्षा सहित विविध क्षेत्रों में सुधा जी का योगदान अतुलनीय और प्रेरणादायक रहा है। राज्यसभा में उनकी उपस्थिति हमारी 'नारी शक्ति' का शक्तिशाली प्रमाण है, जो हमारे देश की नियति को आकार देने में महिलाओं की ताकत और क्षमता का उदाहरण है। इसके साथ ही पीएम मोदी ने आगे लिखा है कि उनके सफल संसदीय कार्यकाल की कामना करता हूं।'

पीएम मोदी ने किया युवा हस्तियों को सम्मानित

-जया किशोरी, मैथिली ठाकुर,आरजे रौनक समेत अनेक को मिला नेशनल क्रिसर्टस अवॉर्ड

नई दिल्ली।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आज शुक्रवार को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के खास मौके पर अनेक युवा हस्तियों को नेशनल क्रिएटर्स अवॉर्ड से सम्मानित किया है। भारत मंडपम में आयोजित कार्यक्रम में कथावाचक जया किशोरी, लोकगायिका मैथिली ठाकुर और आरजे रौनक समेत अनेक युवा हस्तियां सम्मानित हुई हैं। गौरतलब है कि ये अवॉर्ड 20 से ज्यादा कैटेगरी में दिए गए हैं। इनमें बेस्ट स्टोरीटेलिंग से लेकर सेलिब्रेटी क्रिएटर ऑफ द ईयर, ग्रीन चैम्पियन अवॉर्ड, स्वच्छता एंबेसेडर अवॉर्ड, बेस्ट क्रिएटर फॉर सोशल चेंज, बेस्ट ट्रैवल क्रिएटर, मोस्ट इम्पैक्टफुल एग्री क्रिएटर, कल्चरल एंबेसेडर ऑफ द ईयर, इंटरनेशनल क्रिएटर अवॉर्ड, द न्यू इंडिया चैम्पियन अवॉर्ड, टेक क्रिएटर अवॉर्ड, हेरिटेज फैशन आइकॉन अवॉर्ड, मोस्ट क्रिएटिव क्रिएटर (मेल एंड फीमेल), बेस्ट क्रिएटर इन फूड कैटेगरी, बेस्ट क्रिएटर इन एजुकेशन कैटेगरी, बेस्ट क्रिएटर इन गेमिंग कैटेगरी, बेस्ट माइक्रो क्रिएटर, बेस्ट नैनो क्रिएटर, बेस्ट हेल्थ एंड फिटनेस क्रिएटर कैटेगरी को शामिल किया गया है।

इस अवसर पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि ये अवॉर्ड देश की सोशल मीडिया कंटेंट कम्युनिटी में इनोवेशन और क्रिएटिविटी की दिशा में उठाए गए कदम को सम्मानित करने के लिए है।

पीएम मोदी पहले नेशनल क्रिएटर अवॉर्ड कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि ये अवॉर्ड आगे आने वाले समय में बहुत महत्वपूर्ण स्थान लेंगे। इन अवॉर्ड से युवाओं को एक नई पहचान मिली है। उन्होंने कहा कि युवा ही देश का भविष्य होते हैं, यही युवाओं की ताकत है कि वे खुद ही कंटेंट तैयार करते हैं, एक्ट करते हैं, उसे एडिट करते हैं और फाइनल प्रोडक्ट पेश कर देते हैं। इससे हम समझ सकते हैं कि आप लोगों के अंदर कितनी ताकत है।

पीएम मोदी ने युवाओं के कंटेंट को भारत में जबरदस्त प्रभावी बताया और कहा कि आज लाखों लोग इंटरनेट पर कंटेंट बनाते हैं। हमने तो पहले कभी सोचा भी नहीं था कि सोशल मीडिया कंटेंट से इतना प्रभाव डाला जा सकता है। यह सच में एक क्रांति की तरह ही है।

17 को मुंबई में महारैली कर, लोकसभा चुनाव का अभियान शुरु करेंगे राहुल

इंडिया गठबंधन के सभी नेताओं को बुलावा

मुंबई ।

कांग्रेस नेता और पार्टी के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी 17 मार्च को मुंबई के ऐतिहासिक छत्रपति शिवाजी महाराज पार्क से भारत जोड़ो न्याय यात्रा का समापन करने और विपक्षी इंडिया गठबंधन की ओर से लोकसभा चुनाव अभियान 2024 की शुरुआत करने वाले है। एक शीर्ष पार्टी नेता ने इसकी जानकारी दी। कांग्रेस महाराष्ट्र इकाई के अध्यक्ष नाना पटोले और एआईसीसी महासचिव रमेश चेन्निथला ने कहा कि भारत जोड़ो न्याय यात्रा 12 मार्च को नंदुरबार में महाराष्ट्र में प्रवेश करेगी, फिर 16 मार्च तक मुंबई पहुंचेगी और विपक्षी गठबंधन के चुनाव अभियान की शुरुआत के साथ खत्म होगी। पटोले ने कहा, भारत जोड़ो न्याय यात्रा के महाराष्ट्र चरण और 17 मार्च को सीएसएम पार्क में रैली के लिए सभी तैयारियां कर ली गई हैं। उन्होंने कहा कि 17 मार्च को इंडिया गठबंधन की संयुक्त पहली रैली में लाखों लोगों के शामिल होने की उम्मीद है। मेगा-रैली के लिए इंडिया गठबंधन के सभी शीर्ष नेताओं को आमंत्रित किया गया है। गठबंधन में महा विकास अघाड़ी के सहयोगी जैसे शिवसेना (यूबीटी), राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एसपी) और अन्य छोटे सहयोगी दल शामिल हैं। विधानसभा में

नेता प्रतिपक्ष विजय वडेट्टीवार, कांग्रेस विधायक दल के नेता बालासाहेब थोराट, कार्यकारी अध्यक्ष एम. आरिफ नसीम खान, पूर्व मुख्यमंत्री सुशील कुमार शिंदे और पृथ्वीराज चव्हाण, मुंबई कांग्रेस अध्यक्ष वर्षा गायकवाड़ सहित राज्य के शीर्ष कांग्रेस नेताओं में पार्टी के अन्य वरिष्ठ नेता शामिल हैं।

सीबीआई ने रूस भेजने वाले तस्करी रैकेट का भंडाफोड़ किया

देश में एक साथ 13 जगह छापेमारी

नई दिल्ली । केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) ने तस्करी रैकेट का भंडाफोड़ हुआ है, जो भारतीय नागरिकों को बेहतर रोजगार की आड़ में रूस भेज रहा था, ताकि उन्हें चल रहे रूस-यूक्रेन युद्ध में लड़वाया जा सके। सीबीआई अधिकारियों के अनुसार, ये तस्कर एक संगठित नेटवर्क में काम कर रहे थे, जो सोशल मीडिया प्लेटफार्मों के माध्यम से और अपने स्थानीय संपर्कों/एजेंटों के माध्यम से भारतीय नागरिकों को रूस में अत्यधिक भुगतान वाली नौकरियों के लिए लुभा रहे थे। वरिष्ठ सीबीआई अधिकारी ने बताया तस्करी किए गए भारतीय नागरिकों को युद्धक भूमिकाओं में प्रशिक्षित कर उनकी इच्छा के विरुद्ध युद्ध क्षेत्र में अग्रिम ठिकानों पर तैनात किया गया, जिससे उनका जीवन गंभीर खतरे में पड़ गया। यह पता चला है कि युद्ध क्षेत्र में कुछ पीड़ित गंभीर रूप से घायल भी हुए थे। अधिकारी ने कहा, निजी वीजा कंसल्टेंसी फर्मों, एजेंटों और अन्य लोगों के खिलाफ मानव तस्करी का मामला दर्ज किया गया था, जो बेहतर रोजगार और उच्च वेतन वाली नौकरियों की आड़ में भारतीय नागरिकों को रूस में तस्करी करने में लगे हुए पाए गए। सीबीआई अधिकारी ने बताया कि ये रैकेट कई राज्यों में फैला हुआ था। सीबीआई ने मामले में दिल्ली, तिरुवनंतपुरम, मुंबई, अंबाला, चंडीगढ़, मदुरै और चेन्नई में लगभग 13 स्थानों पर एक साथ तलाशी ले रही है। उन्होंने कहा, अब तक 50 लाख रुपये से अधिक की नकदी, आपत्तिजनक दस्तावेज और लैपटॉप, मोबाइल फोन और डेस्कटॉप जैसे इलेक्ट्रॉनिक गैजेट जब्त किए गए हैं।अधिकारी ने कहा, कुछ संदिग्धों को विभिन्न स्थानों से पूछताछ के लिए हिरासत में भी लिया गया है। अब तक पीड़ितों को विदेश भेजे जाने के लगभग 35 मामले सामने आए हैं।

400 पार मिशन में जुटी भाजपा, शाह-नड्डा से मिले नायडू और पवन कल्याण

ओडिशा में बीजेपी और बीजेडी के बीच होगा गठबंधन

नई दिल्ली ।

एनडीए गठबंधन में तेलुगू देशम पार्टी (टीडीपी) की वापसी की खबरों के बीच पूर्व सीएम चंद्रबाबू नायडू और पवन कल्याण केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह के दिल्ली स्थित आवास पर पहुंचे। बताया जा रहा है कि आंध्र प्रदेश में गठबंधन और सीट बंटवारे को लेकर टीडीपी मुखिया चंद्रबाबू नायडू और जनसेना पार्टी प्रमुख पवन कल्याण शाह और भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा के साथ विचार-विमर्श कर रहे हैं। सूत्रों ने बताया कि भाजपा और तेलुगू देशम पार्टी के बीच आंध्र प्रदेश में गठबंधन की बातचीत अंतिम दौर में पहुंच गई है, और जल्द ही टीडीपी की एनडीए गठबंधन में वापसी का ऐलान हो सकता है। इसकारण शाह, नड्डा, चंद्रबाबू और पवन कल्याण की इस मुलाकात को काफी अहम माना जा रहा है।

हालाँकि, कई महीनों में दोनों नेताओं के बीच दूसरी बैठक ने ऐसी संभावना को उज्ज्वल कर दिया है। टीडीपी नेताओं ने कहा कि गठबंधन बनाने में अब और देरी फायदेमंद नहीं होगी क्योंकि चुनाव सिर पर आ गया हैं। कोई भी अस्पष्टता पार्टी कार्यकर्ताओं और समर्थकों को भ्रमित करेगी।

अभिनेता पवन कल्याण के नेतृत्व वाली जन सेना पार्टी, जो एनडीए का सदस्य रही है, पहले ही टीडीपी के साथ हाथ मिला चुकी है और भाजपा से भी ऐसा करने का आग्रह कर रही है। इस बीच भाजपा और बीजू जनता दल, जो ओडिशा में सत्ता में है, अपने गठबंधन को अंतिम रूप देने की कगार पर हैं, क्योंकि दोनों दलों के वरिष्ठ नेताओं ने अलग-अलग बैठकें कीं और ऐसी संभावना के संकेत दिए।

रिपोर्टों से संकेत मिलता है कि आंध्र प्रदेश में भाजपा कितनी सीटों पर चुनाव लड़ेगी, इस लेकर दोनों पार्टियों के बीच मतभेद पैदा हो गए हैं, जहां इसकी उपस्थिति अपेक्षाकृत सीमित है। 25 लोकसभा और 175 विधानसभा सीटें दांव पर होने के कारण, भाजपा का लक्ष्य आठ से दस संसदीय क्षेत्रों में चुनाव लड़ना है।

भाजपा के लिए जटिल मामला मुख्यमंत्री जगन मोहन रेड्डी का संसद में मोदी सरकार के एजेंडे के लिए स्पष्ट समर्थन के साथ-साथ वरिष्ठ भाजपा नेताओं के साथ उनके अनुकूल व्यक्तिगत संबंध हैं। यहां यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि भाजपा सक्रिय रूप से राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) को व्यापक बनाने की कोशिश कर रही है, जिसका लक्ष्य अप्रैल-मई में होने वाले आगामी लोकसभा चुनावों में मजबूत प्रदर्शन करना है।

लोकसभा चुनाव से पहले आईईडी लगाते पकड़े गए 2 नक्सली

सुकमा ।

छत्तीसगढ़ के सुकमा में नक्सलियों के खिलाफ पुलिस ने जिले में सक्रिय दो नक्सलियों को गिरफ्तार किया है। ये नक्सली 5 किलो की आईईडी लगा रहे थे। सर्चिंग अभियान के तहत उन्हें पकड़ लिया गया। इनका मकसद लोकसभा चुनाव से पहले सुरक्षाबलों को नुकसान पहुंचाना था।

जानकारी के अनुसार पुलिस ने पोलमपल्ली थाना क्षेत्र के अरलमपल्ली निवासी दो नक्सलियों को गिरफ्तार किया है। इनके पास से भारी मात्रा में विस्फोटक सामग्री भी बरामद की गई है। पुलिस की जब नक्सलियों पर नजर पड़ी तब वे गढ्ढा खोदकर आईईडी लगा रहे थे। जब दोनों ने पुलिस को अपनी ओर आते देखा तो जंगल की ओर भागने लगे। इसी बीच पुलिस ने घेराबंदी कर उन्हें पकड़ लिया।

दोनों नक्सलियों के पास से एक-एक झोला मिला है। इन दोनों की पहचान 25 साल के सोड़ी लख्खा उर्फ लखमा और 23 साल के मड़कम पोज्जा के रूप में हुई है। सोड़ी लक्खा के कब्जे से एक झोले में 5 नग नॉन इलेक्ट्रिक डेटोनेटर, जिलेटिन रॉड 2 नग, कॉडेक्स वायर 5 मीटर, नग नक्सल साहित्य और 2 नग नक्सल पर्चा मिला है। वहीं दूसरे नक्सली मड़कम पोज्जा के पास एक टिफिन बम, फ्यूज बत्ती, बिजली का तार भी मिला है। जब पुलिस ने दोनों से पूछताछ की तो पता चला कि ये नक्सली पिछले 9-10 साल से नक्सल संगठन से जुड़े हैं। बड़े नक्सली नेताओं के कहने पर ये सुरक्षाबलों को नुकसान पहुंचाने के मकसद से आईईडी प्लांट कर रहे थे। पुलिस को देखते ही वे भागने लगे। पुलिस का कहना है कि दोनों नक्सलियों के खिलाफ मामला दर्ज कर जांच की जा रही है। सुकमा एसएसपी उत्तम प्रताप ने बताया कि मुखबिर की सूचना पर 6 मार्च को थाना दोरनापाल से जिला बल और डीआरजी की संयुक्त टीम एरिया डोमिनेशन व सूचना की तस्दीक के लिए गई थी। टीमें जब ग्राम मेड़वाही अरलमपल्ली और पालामड़गू के जंगल व पहाड़ी क्षेत्र की ओर जाने लगीं तो रास्ते में कोसागुड़ा पगडंडी पर दो संदिग्ध नजर आए। ये दोनों रास्ते में गढ्ढा खोद रहे थे। पुलिस को कुछ शक हुआ तो तुरंत वहां पहुंची। पुलिस को देख दोनों भागने लगे लेकिन घेराबंदी कर उन्हें पकड़ लिया गया।

कांग्रेस नेता सिद्धू का दावा....मान कांग्रेस में शामिल होना चाहते थे

चंडीगढ़ ।

पंजाब कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष नवजोत सिंह सिद्धू ने मुख्यमंत्री भगवंत मान को लेकर बड़ा दावा किया है। उन्होंने कहा है कि मान कांग्रेस में शामिल होना चाहते थे। इतना ही नहीं उनका दावा है कि मान उनका डिप्टी बनने के लिए भी तैयार थे। हालांकि, आम आदमी पार्टी नेती की तरफ से इसपर कोई प्रतिक्रिया नहीं आई है। कांग्रेस नेता सिद्धू ने इंटरव्यू का वीडियो पोस्ट किया है, जिसमें मान के कांग्रेस में शामिल होने की बात पर चर्चा जारी है। इसमें सिद्धू को कहते हुए सुना जा सकता है, मान आए, पाजी मैं आपका डिप्टी बनने के लिए तैयार हूं, मुझे कांग्रेस में शामिल करा लो। अगर आप आम आदमी पार्टी में आते हैं, तब भी आपका डिप्टी बनने के लिए तैयार हूं। कांग्रेस नेता ने कहा, मैंने उसको कहा कि सिद्धू राहुल गांधी और प्रियंका गांधी को वचनबद्ध है। यह मुमकिन नहीं है। अगर आप आना चाहते हैं छोटे भाई, तब वेलकम है। दिल्ली जाकर भाई से बात करो। इंटरव्यू के दौरान उन्होंने पंजाब की आप सरकार के मुद्दे पर भी घेरा। उन्होंने कहा, वे विमान और महंगी गाड़ियों में चलते हैं, लेकिन कर्ज पंजाबियों को चुकाना पड़ता है। अटकलें हैं कि सिद्धू की भारतीय जनता पार्टी में वापसी हो सकती है। हालांकि, उन्होंने अब तक इसपर खुलकर कुछ नहीं कहा है।

कोर्ट की केजरीवाल को दो टूक, समन का पालन करने बाध्य हैं

नई दिल्ली । कथित शराब घोटाले में प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) के 8 समन को दरकिनार कर चुके मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को 16 मार्च को कोर्ट में पेश होना होगा। दिल्ली की अदालत ने यह कहकर केजरीवाल को तलब किया है कि वे मनी लॉन्ड्रिंग केस में समन का पालन करने के लिए बाध्य हैं, लेकिन कथित तौर पर ऐसा करने में असफल रहे। समन नजरअंदाज करने पर ईडी ने कोर्ट से शिकायत की है। राउज एवेन्यू कोर्ट में अडिशनल चीफ मेट्रोपोलिटन मजिस्ट्रेट दिव्या मल्होत्रा ने केजरीवाल को आईपीसी की धारा 174 (लोकसेवक के आदेश का पालन ना करना) के तहत आरोप को लेकर तलब किया है। कोर्ट ने कहा, शिकायत और रिकॉर्ड पर रखे गए सामग्री के मुताबिक पहली नजर में धारा 174 के तहत अपराध हुआ है और सीआरपीसी की धारा 204 के तहत आरोपी केजरीवाल के खिलाफ कार्यवाही शुरू करने के लिए पर्याप्त आधार हैं। कोर्ट के जज ने कहा कि पीएमएलए की विभिन्न धाराओं के तहत, जिस व्यक्ति को तलब किया है, वह उसका अनुपालन करने के लिए बाध्य है और जो लोग ऐसा नहीं करते हैं, कानून के तहत उनके खिलाफ मुकदमा चल सकता है। कोर्ट ने कहा, इस प्रकार अधिनियम के आदेश के अनुसार प्रतिवादी समन का पालन करने के लिए कानूनी रूप से बाध्य था, लेकिन कथित तौर पर वह ऐसा करने में विफल रहा...। अदालत ने गौर किया कि भले ही इसी तरह के आरोपों के साथ केजरीवाल के खिलाफ यह केवल दूसरी ईडी शिकायत है, लेकिन शिकायतकर्ता का यह तर्क ठोस है कि किसी लोक सेवक द्वारा जारी किए गए समन पर पेश नहीं होना एक अलग अपराध होगा।

हिमाचल में सीएम सुक्खू राज्य के हालातों से पूरी तरह बेखबर

-कांग्रेस पर्यवेक्षकों ने अपनी रिपोर्ट में किया ज़िक्र

शिमला।

हिमाचल प्रदेश में अपने मुख्यमंत्री सुखविंद्र सिंह सुक्खू को कांग्रेस ने अपनी रिपोर्ट में राज्य के हालात से बेखबर बताया है। चुनाव में विफलता व राज्य इकाई के हालात के लिए प्रदेश अध्यक्ष प्रतिभा सिंह को भी जिम्मेदार बताया गया। इतना ही नहीं कांग्रेस की रिपोर्ट में असंतुष्ट नेता विक्रमादित्य सिंह के काम को पार्टी का अनुशासन तोड़ने वाला बताया गया। रिपोर्ट में कहा गया है कि बागी विधायकों को भाजपा ने प्रलोभन दिया। कांग्रेस पर्यवेक्षकों की रिपोर्ट में साफ बताया गया कि मुख्यमंत्री अनुमान नहीं लगा सके कि मतदान में क्रॉस वोटिंग होगी। ऐसी बेखबरी स्वीकार नहीं की जा सकती। सीएम अपने विधायकों को जोड़कर नहीं रख सके। भविष्य में अगर पार्टी के भीतर बगावत हुई, तब वे इस रोक पाएंगे, इसमें भी संदेह पैदा होता है। वहीं प्रतिभा सिंह जो कि मौजूदा प्रदेश अध्यक्ष हैं, लेकिन उन्हें लोकसभा चुनाव में उतार देना चाहिए। अध्यक्ष पद किसी और को दे देना चाहिए। इसके अलावा युवा नेता और विधायक विक्रमादित्य सिंह के संकट के समय उनके कामों ने पार्टी का अनुशासन तोड़ा। प्रमुख नेताओं को संदेह है कि क्या भविष्य के लिए उन पर भरोसा किया भी जा सकता है। रिपोर्ट में इसका जिक्र हैं कि क्रॉस वोट करने वाले विधायकों को भाजपा ने प्रलोभन दिया। भाजपा प्रदेश की कांग्रेस सरकार को अस्थिर करने का लगातार प्रयास कर रही है। कांग्रेस की रिपोर्ट में सुझाव दिया गया कि हिमाचल सरकार को अस्थिर होने से बचाने के लिए तत्काल सुधार करना होगा। आचार संहिता लागू होने से पहले 12 असंतुष्ट विधायकों को कॉरपोरेशन व अन्य पद बांटे जाएं। ये सभी विधायक एकमत नहीं हैं, उनकी एकता तोड़ी जा सकती है।

अपनी पार्टी में बगावत रोकने के लिए भाजपा संग जाने को तैयार नवीन बाबू

15 साल बाद एनडीए में शामिल होने की खबरें

नई दिल्ली ।

लोकसभा चुनाव से पहले भाजपा एनडीए का कुनबा बढ़ाने में जुटी हुई है। इस बीच ओडिशा के सीएम नवीन पटनायक की पार्टी बीजेडी भी भाजपा के एनडीए गठबंधन में शामिल हो सकती हैं। कहा जा रहा है कि एनडीए गठबंधन के 400 से ज्यादा सीटों पर जीत के टारगेट को हासिल करने के लिए भाजपा यह गठबंधन कर रही है। लेकिन सवाल जिसका जवाब हर कोई जानना चाहता है, वह यह है कि आखिर नवीन भाजपा के साथ जाने के लिए क्यों आतुर हैं। वह भी तब जब दो दशक से ज्यादा समय से वह ओडिशा के सीएम बने हुए हैं, इतना ही नहीं लोकसभा में भी वह राज्य में सबसे ज्यादा सीटें जीतते रहे हैं।

बीजेडी के कुछ सीनियर नेताओं का कहना है कि 15 साल बाद भाजपा संग आने की एक वजह यह है कि नवीन अपने उत्तराधिकार के प्लान पर काम कर रहे हैं। इसकारण वे व्यवहारिक फैसला ले रहे हैं और सुरक्षित राजनीति करना चाहते हैं। नवीन भले ही लगातार बीजेडी के एकछत्र नेता बने हुए हैं, लेकिन अब उनकी बढ़ती उम्र के कारण उत्तराधिकार प्लान की भी चर्चाएं हैं। इस कारण से बीजेडी में आंतरिक कलह की स्थिति पैदा हो गई है। पिछले कुछ समय में बीजेडी के कई विधायकों ने पार्टी छोड़ भाजपा में शामिल हुए हैं। इन नेताओं में अरविंद धाली, प्रदीप पाणिग्रही, प्रशांत जगदेव, देबाशीष नायक शामिल हैं। दरअसल नवीन कई सांसदों और विधायकों के टिकट भी काटने की योजना में हैं। वे नए चेहरों को शामिल करना चाहते हैं। इसके चलते नेताओं में बेचैनी है। दरअसल नवीन की पार्टी में चर्चा है कि वह केवी पांडियान को अपना उत्तराधिकारी बना सकते हैं, जो एक नौकरशाह थे। फिलहाल वे सीएम की ओर से पूरे प्रदेश में दौरे कर रहे हैं और अहम फैसले ले रहे हैं।

वहीं पार्टी में पलायन को रोकने के लिए नवीन की रणनीति है कि भाजपा को ही साथ ले लिया जाए।

फिर बागी नेता आखिर कहां जाएंगे। इस फैसले से वे पार्टी में स्थिरता ला सकते है। इसके अलावा केंद्र सरकार से भी संबंध अच्छे बने रह सकते है। इसके अलावा बदले में नवीन पटनायक की पार्टी भी केंद्र की सत्ता में कोई साझेदारी नहीं मांगेगी।

दिल्ली एयरपोर्ट को महिलाएं कर रहीं संचालित, अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर गुलाबी रंग में रंगा

नई दिल्ली। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के खास मौके पर आज दिल्ली एयरपोर्ट के तमाम टर्मिनल पर सिर्फ महिलाएं ही नजर आ रही हैं। यही नहीं एयरपोर्ट को भी गुलाबी रंग में रंगने का उपक्रम किया गया है। इससे पहले एयरपोर्ट संचालित करने वाली कंपनी ने ऑल वुमन शिफ्ट की घोषणा करते हुए कहा था कि दिल्ली एयरपोर्ट का नजारा शुक्रवार को बदला-बदला नजर आएगा। इसके तहत कंपनी ने कहा था कि एयपोर्ट के सभी टर्मिनल पर सिर्फ महिलाएं ही नजर आएंगी। यही नहीं एयरपोर्ट भी गुलाबी रंग में रंगा जाएगा। इसी के साथ कंपनी ने ऑल वुमन शिफ्ट की घोषणा कर दी। इसका मुख्य कारण एविएशन इंडस्ट्री में समानता को बढ़ावा देना है। कंपनी ने महिलाओं के लिए खास व्यवस्था की है और इसे पिंक शिफ्ट नाम दिया है। इस बीच एयरपोर्ट के तीनों टर्मिनल्स पर महिलाएं तैनात रहेंगी। महिला कर्मचारी 8 घंटे की पूरी शिफ्ट संभालेंगी। इस संबंध में दिल्ली इंटरनेशनल एयरपोर्ट लिमिटेड का कहना है कि 8 मार्च को पूरे एक शिफ्ट में सिर्फ महिलाएं होंगी। कंपनी का कहना है कि ऐसा करने से संदेश जाएगा कि टर्मिनल संचालन में महिलाओं का विशेष योगदान बराबर रहता है और इस पहल से विमानन सेक्टर में अपना कॅरिअर बनाने की इच्छुक महिला पेशेवरों के लिए यह प्रेरणा का काम करेगा।

एमडी ड्रग्स की तस्करी में महिलाएं भी शामिल, पुणे से दिल्ली तक छापेमारी में साढ़े तीन हजार करोड़ की एमडी जब्त

पुणे। पुणे शहर पुलिस की अपराध शाखा द्वारा तैयार की जा रही ड्रग पेडलर्स की सूची में 50 महिला ड्रग पेडलर्स शामिल हैं, महिला ड्रग पेडलर्स क्राइम ब्रांच के रडार पर रहने वाली हैं। दिन-ब-दिन देखा जा रहा है कि शहर में नशे का जाल फैलता जा रहा है और चौंकाने वाली जानकारी सामने आई है कि इस नशे की तस्करी में महिला ड्रग तस्कर भी शामिल हैं। हाल ही में पुणे से लेकर दिल्ली तक क्राइम ब्रांच की विभिन्न टीमों द्वारा की गई छापेमारी में साढ़े तीन हजार रुपये कीमत का मेफेड्रोन (एमडी) जब्त किया गया था. यह एमडी पुणे जिले के कुरकुंभ एमआईडीसी में तैयार किया जा रहा था। इसे पुणे के रास्ते दिल्ली समेत अन्य शहरों में भेजा जाता था। इस घटना के सामने आने के बाद शहर भर में पुलिस ने नशे पर नकेल कसना शुरू किया है. मादक द्रव्य निरोधक दस्तों ने पिछले साल बहुत अच्छा काम किया है, दर्ज किए गए मामलों और जब्त की गई वस्तुओं की संख्या पिछले दशक में सबसे अधिक है। वर्ष 2021, 2022 और 2023 में क्रमशः 107, 150 और 160 मामले दर्ज किए गए हैं, जिनमें 154, 200 और 223 आरोपियों को गिरफ्तार किया गया है. गिरफ्तार किए गए आरोपी मुख्य रूप से मादक पदार्थों की तस्करी श्रृंखला के सबसे निचले पायदान यानी ड्रग तस्कर थे। इसमें महिलाओं की संख्या भी उल्लेखनीय है. पुलिस अधिकारियों ने बताया कि इनमें मुख्य रूप से शिवाजीनगर इलाके की पाटिल एस्टेट बस्ती, शिवाजीनगर रेलवे स्टेशन के पास की झुग्गियों की महिलाएं शामिल हैं।

- महिलाओं द्वारा गांजे की अधिक तस्करी

ड्रग्स की तस्करी में मुख्य रूप से महिलाएं गांजा की तस्करी करती हैं। अभी तक महिलाओं को एमडी तस्करी में शामिल होते नहीं देखा गया है। चरस, कोकीन के मामले में एक से दो विदेशी महिलाओं को गिरफ्तार किया गया. ग्रामीण पुलिस ने गांजा तस्करी में पुणे शहर सहित गांवों की कुछ महिलाओं पर केस दर्ज किया है।

- महिला तस्करों के गिरोह पर मकोका

पहले यह बात सामने आई थी कि मादक पदार्थों की तस्करी में महिला गिरोह सक्रिय हैं। कुछ महिलाओं को खड़क पुलिस स्टेशन की सीमा के भीतर गांजा सहित नशीले पदार्थों की तस्करी करते हुए पाया गया। अपराध शाखा के सहायक आयुक्त सतीश गोवेकर ने बताया कि खड़क पुलिस ने उनके खिलाफ कार्रवाई भी की. हालाँकि उसके बाद भी उनके द्वारा अपराध किये गये। इसलिए, तत्कालीन पुलिस आयुक्त रश्मी शुक्ला के कार्यकाल के दौरान, संगठित अपराध नियंत्रण अधिनियम (मकोका) के तहत महिलाओं के इस गिरोह के खिलाफ कार्रवाई की गई थी।

- गांजा और एमडी का सेवन

शहर में एमडी, चरस, कोकीन, ब्राउन शुगर, एलएसडी स्टैम्प और गांजा जैसे नशीले पदार्थों की तस्करी होती देखी जाती है। हालांकि, इसमें गांजा और एमडी की मात्रा सबसे ज्यादा है। मादक द्रव्य निरोधक दस्ते ने पिछले वर्ष (2023) में 64 घटनाओं में लगभग 1,200 किलोग्राम गांजा जब्त किया है। उसके बाद एमडी की कार्रवाई है. देखा गया है कि शहर में नशे के आदी लोग गांजा और एमडी पसंद करते हैं।

महिलाओं को आगे बढ़ने के लिए सरकार उठा रही हर आवश्यक कदम : तेलंगाना के मुख्यमंत्री

हैदराबाद।

तेलंगाना के मुख्यमंत्री ए. रेवंत रेड्डी ने शुक्रवार को कहा कि महिलाओं को विकास के पथ पर आगे बढ़ाने के लिए सरकार हर आवश्यक कदम उठा रही है। उन्होंने कहा कि सरकार ने महिला सशक्तिकरण और आर्थिक आत्मनिर्भरता की दिशा में टीएसआरटीसी बसों में महिलाओं के लिए मुफ्त यात्रा और 500 रुपये में रसोई गैस सिलेंडर जैसी योजनाएं शुरू की है। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर महिलाओं को बधाई देते हुए उन्होंने कहा कि 'प्रजा पालन' (लोगों का शासन) के तहत महिलाओं का प्रतिनिधित्व और भागीदारी बढ़ी है। मुख्यमंत्री की इच्छा है कि महिलाओं को सभी क्षेत्रों में समान अवसर और अधिकार मिलें। उन्होंने कहा कि महिलाओं की प्रगति के लिए राज्य सरकार जल्द ही स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से नए कार्यक्रम शुरू करेगी। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार महिलाओं की सहायता के लिए और भी योजनाएं लागू करेगी। इस बीच, राज्यपाल तमिलिसाई सौंदरराजन ने अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर महिलाओं को शुभकामनाएं दीं। राज्यपाल ने अपने संदेश में कहा कि हमारी विरासत, संस्कृति और परंपराएं सदियों से महिलाओं को देवी व 'शक्ति' के रूप में पूजती रही हैं।

उन्होंने कहा,'हमें महिला सशक्तिकरण और लैंगिक समानता के प्रति अटूट प्रतिबद्धता के लिए प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी का आभारी होना चाहिए, जिन्होंने महिला आरक्षण विधेयक 2023 को पारित कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनके दूरदर्शी नेतृत्व में 'नारी शक्ति' को बढ़ावा मिला।'

संक्षिप्त समाचार

दिल्ली की अदालत ने 11 आरोपियों को आरोपमुक्त किया

2020 में हुए दंगों में आगजनी से जुड़ा मामला

नई दिल्ली ।

दिल्ली की अदालत ने 2020 में हुए दंगों के मामले में 11 आरोपियों को आरोपमुक्त कर कहा कि उन पर कथित अपराध करने का कोई गंभीर संदेह नहीं है। अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश पुलस्त्य प्रमाचला 11 लोगों के खिलाफ मामले की सुनवाई कर रहे थे, जिन पर 23 फरवरी, 2020 को दयालपुर के शेरपुर चौक पर दंगा, पथराव, तोड़फोड़ और आगजनी करने वाली भीड़ का हिस्सा होने का आरोप था। अदालत ने कहा, यह नहीं कहा जा सकता कि इस मुकदमे में जिन घटनाओं का जिक्र हुआ, उसमें से किसी में भी आरोपियों की संलिप्तता को लेकर गंभीर संदेह है। वास्तव में मामले में जोड़ी गईं अन्य शिकायतों से संबंधित घटना के लिए दोषी पाए जाने के संबंध में कोई विशेष सबूत नहीं है...। न्यायाधीश ने कहा, मुझे लगता है कि आरोपी अजमत अली, शादाब आलम, नावेद, मोहम्मद शाहिद, मोहम्मद शाकिर, नदीम, मोहम्मद सोहेल, सुल्तान अहमद, वाजिद, सुलेमान और मोहम्मद फईम आरोपमुक्त होने के हकदार हैं।

इजराइल में मारे गए भारतीय श्रमिक मैक्सवेल का शव भारत भेजा गया

नई दिल्ली ।

इजराइल में लेबनान से दागी गई टैंक रोधी मिसाइल के हमले में मारे गए भारतीय श्रमिक पी. मैक्सवेल का शव भारत भेजा गया। मैक्सवेल (30) केरल के कोल्लम के रहने वाले थे। इजराइल के गृह मंत्री मोशे अर्बेल, जनसंख्या एवं आव्रजन प्राधिकरण (पीआईबीए) के महानिदेशक, इजराइली विदेश मंत्रालय के अधिकारी और भारतीय दूतावास के वरिष्ठ राजनयिक मैक्सवेल के श्रद्धांजलि कार्यक्रम में उपस्थित रहे। भारत के लिए इजराइली राजदूत नाओर गिलोन ने लिखा, गृह मंत्री अर्बेल और उनकी टीम के वरिष्ठ सदस्यों के नेतृत्व में कृषि मंत्रालय का एक उच्च-स्तरीय प्रतिनिधिमंडल भारतीय नागरिक मैक्सवेल के श्रद्धांजलि कार्यक्रम में गया। मैक्सवेल एक खेत में काम कर रहे थे तभी हिजबुल्ला के रॉकेट हमले में उनकी मौत हो गई। ओम शांति। एअर इंडिया के विमान से शव दिल्ली ले जाया गया और वहां से शुक्रवार को अपराह्न तीन बजे तिरुवनंतपुरम भेजा जाएगा। इस हमले में सात अन्य कर्मचारी घायल हो गए, जिसमें केरल के मूल निवासी दो भारतीय भी शामिल हैं। हमले में वाजाथोप के निवासी 31 वर्षीय बुश जोसेफ जॉर्ज और वागामोन के रहने वाले 28 वर्षीय पॉल मेल्विन घायल हो गए थे, जिसके बाद उन्हें अस्पतालों में भर्ती कराया गया।

पीएम मोदी का 2 दिवसीय असम दौरा आज से

नई दिल्ली।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी आज शुक्रवार 08 मार्च से दो दिवसीय दौरे पर असम पहुंचेंगे। इस दौरान वो काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान में रुकेंगे और 18 हजार करोड़ रुपये की परियोजनाओं का उद्घाटन और शिलान्यास करेंगे। पीएम मोदी के दौरे की जानकारी दे रहे अधिकारियों ने बताया कि पीएम मोदी दोपहर बाद तेजपुर पहुंचेंगे। तेजपुर से वो हेलीकॉप्टर के जरिए काजीरंगा के पनबारी के लिए उड़ान भरेंगे। पीएम मोदी उद्यान में 'सेंट्रल कोहोरा रेंज' के पास पुलिस अतिथि गृह में रात विश्राम करेंगे। इसके बाद दूसरे दिन शनिवार की सुबह पीएम मोदी जंगल सफारी का भ्रमण करेंगे। इसके लिए जीप और हाथी सफारी दोनों की ही व्यवस्था की गई है। अधिकारियों का कहना है कि पीएम मोदी सफारी में करीब दो घंटे बिताएंगे, इसके बाद अरुणाचल के लिए रवाना होंगे। यहां पर उन्हें 2 कार्यक्रमों में शामिल होना है। इसके बाद वो दोपहर के समय जोरहाट लौटेंगे और महान अहोम जनरल लचित बोरफुकन की 125 फुट ऊंची प्रतिमा 'स्टैच्यू ऑफ वेलर' यानी बहादुरी की प्रतिमा का उद्घाटन करेंगे। पीएम के दौरे की जानकारी दे रहे अधिकारियों ने बताया कि पीएम मोदी इसके बाद मेलेंग मेतेली पोथार जाएंगे, जहां वह करीब 18 हजार करोड़ रुपये की केंद्रीय और राज्य परियोजनाओं का उद्घाटन और शिलान्यास करेंगे। यहां वो एक जनसभा को भी संबोधित करेंगे। इसके बाद वो पश्चिम बंगाल रवाना हो जाएंगे।

संक्षिप्त समाचार

कड़ी मेहनत से बनाई पीएमएल-एन में जगह, मरियम नवाज ने अपनी पिता की पार्टी को बताया पुरुष-प्रधान

लाहौर , एजेंसी। पाकिस्तान के पंजाब प्रांत की पहली महिला मुख्यमंत्री मरियम नवाज ने लाहौर में महिला दिवस के अवसर पर एक कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि पाकिस्तान मुस्लिम लीग-नवाज (पीएमएल-एन) में अपने लिए जगह बनाने के लिए उन्हें कफी कड़ी मेहनत करनी पड़ी है। उन्होंने कहा कि पार्टी में जगह बनाने के लिए मुझे एक दशक से अधिक समय तक कड़ी मेहनत करनी पड़ी है। मरियम नवाज ने अपनी पिता द्वारा बनाई गई पार्टी (पीएमएल-एन) को पुरुष-प्रधान पार्टी करार दिया। उन्होंने कहा कि यह पार्टी ऐतिहासिक रूप से पुरुष-प्रधान पार्टी रही है और मुझे अपने लिए जगह बनाने के लिए 12-13 वर्षों तक काफी मेहनत करनी पड़ी। उन्होंने आगे कहा कि अगर मैं यहां खड़ी हूं, तो यह हर महिला, मां और बेटी के लिए एक संदेश है कि अगर आप कुछ करना चाहती हैं, तो एक महिला होना आपके सपनों और मिशन को पूरा करने में बाधा नहीं बन सकती है। मालूम हो कि पाकिस्तान के पंजाब प्रांत की पहली महिला मुख्यमंत्री वरिष्ठ पीएमएल-एन नेता मरियम नवाज को बनाया गया है। मरियम तीन बार पूर्व प्रधानमंत्री नवाज शरीफ की बेटी हैं। 50 वर्षीय उपाध्यक्ष मरियम ने पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान की पार्टी समर्थित सुन्नी इत्तेहाद काउंसिल (एसआईसी) के सांसदों के बहिर्गमन के बीच मुख्यमंत्री पद का चुनाव जीता है।

हमास नेता याह्या सिनवार के रिश्तेदार गाजा से गए मिस्र

तेल अवीव, एजेंसी। वांछित हमास नेता याह्या सिनवार के करीबी रिश्तेदार कथित तौर पर राफा क्रॉसिंग के जरिए मिस्र चले गए हैं। मीडिया रिपोर्टों में कहा गया है कि सिनवार की बहन के बच्चे हाल ही में मिस्र चले गए हैं। हमास के कई अन्य शीर्ष नेता भी अपने प्रियजनों को गाजा से मिस्र के सुरक्षित क्षेत्रों में ले जाने में कामयाब रहे हैं। इज़रायली समाचार चैनल एन 12 की एक रिपोर्ट के अनुसार, हमास के पुलिस प्रवक्ता अयमान अल बतनजी ने अपने प्रभाव का इस्तेमाल करके अपने दो बच्चों को रफ़ा क्रॉसिंग के माध्यम से मिस्र में भेज दिया। हमास के राजनीतिक ब्यूरो के सदस्य शामेह एल्सराज के चार बच्चे भी मिस्र भागने में सफल रहे। इज़रायली मीडिया ने बताया कि शामेह एल्सराज इज़रायली मिसाइल हमले में मारा गया होगा। हालांकि, हमास और न ही अन्य आतंकवादी समूहों ने अब तक उनकी मौत की घोषणा की है। खालिद मशाल, इस्माइल हनीयेह और मौसा अबू मरज़ौक सहित हमास के वरिष्ठ राजनीतिक नेता कतर की राजधानी दोहा में रह रहे हैं।

खार्किव में 57 बस्तियों से लोगों को निकालेगा यूक्रेन

कीव , एजेंसी। यूक्रेन में एक रिजनल गवर्नर ओलेग सिनेगुबोव ने बताया कि खार्किव क्षेत्र में स्थित 57 बस्तियों से लोगों को निकालने की कार्रवाई शुरू की जाएगी। सिनेगुबोव ने गुरुवार को क्षेत्रीय रक्षा परिषद की बैठक के बाद अपने टेलीग्राम चैनल पर कहा, हमने 57 बस्तियों से लोगों को सुरक्षित निकालने के लिए अनिवार्य राहत बचाव शुरू करने का फैसला किया है। इसके अलावा वेलिकि बर्लुक और ओलखोवत्स्की जिले में स्थित 18 बस्तियों से बच्चों, उनके माता-पिता और कानून की जानकारी देने वाले लोगों को बचाया जाएगा। उन्होंने आगे कहा, इस काम में क्षेत्रीय प्राधिकारी पुलिस सहित स्वयंसेवकों की मदद करेंगे।

शीर्ष भारतीय राजनयिक ने की तालिबान के विदेश मंत्री से अहम मुलाकात

काबुल, एजेंसी। विदेश मंत्रालय के संयुक्त सचिव जेपी सिंह ने गुरुवार को अफगानिस्तान की राजधानी काबुल में तालिबान के विदेश मंत्री अमीर खान मुत्ताकी से मुलाकात की है। सिंह के नेतृत्व में एक शिष्टमंडल भी वहां गया है। इस दौरान दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय संबंधों और आर्थिक सहयोग को बढ़ावा देने पर चर्चा हुई। जेपी सिंह विदेश मंत्रालय में संयुक्त सचिव हैं और पाकिस्तान-अफगानिस्तान-ईरान विभाग के प्रभारी हैं।

अन्य देशों की तरह भारत भी अफगानिस्तान में तालिबान शासन को औपचारिक रूप से मान्यता नहीं देता है। बावजूद इसके दो साल के अंदर तालिबान नेता के साथ जेपी सिंह और भारतीय दल की यह दूसरी और नवीनतम मुलाकात है। इससे पहले जून 2022 में भी सिंह ने काबुल में वहां के विदेश मंत्री से मुलाकात की थी।

इस बैठक के बारे में विदेश मंत्रालय की ओर से कोई आधिकारिक बयान नहीं आया है। अगस्त 2021, यानी जब से तालिबान ने अफगानिस्तान पर कब्जा किया है, तब से भारतीय राजनयिक अफगानिस्तानी पक्ष से दोहा जैसे स्थानों पर मुलाकात करते रहे हैं। इनमें से अधिकांश प्रयासों का नेतृत्व सिंह ने ही किया है, जो विदेश मंत्री के कार्यालय में संयुक्त सचिव भी हैं।

तालिबान के एक प्रवक्ता ने दावा किया है कि मुत्ताकी और सिंह की बैठक के दौरान अफगानिस्तान-भारत संबंधों, आर्थिक मामलों, इस्लामिक स्टेट से लड़ने और भ्रष्टाचार से निपटने पर चर्चा की गई। इस दौरान अफगानिस्तान ने मानवीय सहायता

के लिए भारत को धन्यवाद दिया है। तालिबानी विदेश मंत्री मुत्ताकी ने कहा कि तालिबान संतुलित विदेश नीति के तहत क्षेत्र में भारत को एक अहम साझीदार के रूप में देखता है और भारत के साथ राजनीतिक और आर्थिक संबंधों को मजबूत करना चाहता है।

मुत्ताकी ने अफगान व्यवसायियों, चिकित्सा रोगियों और छात्रों को वीजा जारी करने की सुविधा देने करने के लिए जेपी सिंह को अधिकृत किया है। तालिबान के प्रवक्ता ने सिंह को कोट करते हुए कहा कि भारत अफगानिस्तान के साथ राजनीतिक और आर्थिक सहयोग बढ़ाने और ईरान के चाबहार बंदरगाह के माध्यम से व्यापार बढ़ाने में रुचि रखता है।

बता दें कि भारत ने हाल के महीनों में अफगानिस्तान को करीब 50,000 टन गेहूं, दवाएं, कोविड-19 की वैक्सीन और अन्य राहत सामग्री की आपूर्ति की है। हालाँकि, भारत ने अफगानिस्तान पर तालिबान के कब्जे से पहले शुरू की गई बुनियादी ढांचा परियोजनाओं पर फिर से काम शुरू नहीं किया है। 2021 में अशरफ गनी सरकार के पतन से पहले, भारत ने अफगानिस्तान के लिए 3 अरब डॉलर से अधिक की मदद का वादा किया था लेकिन तालिबान शासन आने के बाद भारत ने उस मदद को रोक दिया। हालांकि, पिछले महीने पेश 2024-25 के बजट में विदेशों के लिए आवंटित परिव्यय में अफगानिस्तान के लिए 200 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है।

टेंशन में क्यों पाकिस्तान: भारत-अफगानिस्तान के मधुर रिश्तों से पड़ोसी देश पाकिस्तान को मिर्ची लगनी तय है क्योंकि अफगानिस्तान और पाकिस्तान के बीच रिश्ते हमेशा से तनावपूर्ण रहे हैं। इन दोनों पड़ोसियों के बीच विवाद की एक प्रमुख वजह डूरंड लाइन है, जो पश्तून बहुल आदिवासी क्षेत्रों से होकर गुजरती है। पहले से ही दोनों देशों के बीच जारी तनाव तब और बढ़ गया जब साल 2021 के आकिरी हफ़्तों में पाकिस्तानी सेना ने अफगानी सीमा के अंदर 15 किलोमीटर तक चहार बुर्ज़क ज़िले तक जमीन हथिया कर बाड़ लगाने की कोशिश की थी, जिसे तालिबान ने नाकाम कर दिया था। इससे पहले नंगहर इलाक़े में भी ऐसी कोशिश हुई थी। अब जब भारत और अफगानिस्तान का तालिबान शासन करीब आ रहे हैं तो पाकिस्तान की बौखलाहट बढ़नी लाजिमी है।

टेकऑफ करते ही निकल गया विमान का पहिया, बाल-बाल बची यात्रियों की जान

सैन फ्रांसिस्को, एजेंसी। बीच आसमान में विमान का पहिया निकल जाने का हैरान कर देने वाला वीडियो सामने आया है। दरअसल, यूनाइटेड एयरलाइंस का विमान जापान जा रहा था। जैसे ही विमान ने टेकऑफ किया और आसमान में पहुंचा उसी दौरान उसका पहिया बाहर निकल गया। विमान के बाई ओर के मुख्य लैंडिंग गियर में लगे 6 टायरों में से एक गिर कर धरती पर गिर गया।

उड़ान भरने के कुछ ही सेंकड में टायर गिरने का यह वीडियो सोशल मीडिया पर भी तेजी से वायरल हो रहा है। बता दें कि बोइंग 777 विमान ने अमेरिका के सैन फ्रांसिस्को से उड़ान भरी थी जिसमें 235 यात्री और 14 चालक दल के सदस्य शामिल थे। विमान की इमरजेंसी लैंडिंग लॉस एंजेलिस में कराई गई और सभी यात्री सुरक्षित है।

6 टायरों में से एक टायर टूटा, देखें वीडियो

वीडियो में दिखाया गया है कि उड़ान भरने के कुछ सेकंड बाद विमान के बाई ओर के मुख्य लैंडिंग गियर असेंबली के छह टायरों में से एक टूट गया। टायर सैन फ्रांसिस्को अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर एक पार्किंग एरिया में एक कार की पिछली खिड़की पर जा गिरा। हवाईअड्डे के प्रवक्ता डौग याकेल ने एक बयान में कहा कि इस घटना में कोई घायल नहीं हुआ।

लॉस एंजिल्स अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर दमकल गाड़ियां खड़ी थीं, लेकिन उनकी जरूरत नहीं पड़ी। हवाई अड्डे के प्रवक्ता डे लेविन ने कहा कि विमान सुरक्षित रूप से उतर गया। एयरलाइन ने कहा कि 2002 में निर्मित विमान को बिना टायरों के साथ सुरक्षित रूप से लैंड करने के लिए डिजाइन किया गया था। बोइंग 777 में दो मुख्य लैंडिंग गियर में से प्रत्येक पर छह टायर होते हैं।

कनाडा के ओटावा में चाकूबाजी से हड़कंप, छात्र ने साथ रहने वाले छह लोगों को उतारा मौत के घाट

टोरंटो , एजेंसी। कनाडा की राजधानी ओटावा में चाकूबाजी की घटना से हड़कंप मच गया है। यहां एक घर में एक छात्र ने चाकू से हमला कर 6 लोगों को मौत के घाट उतार दिया। ओटावा पुलिस ने गुरुवार को बताया कि श्रीलंका के एक 19 वर्षीय छात्र पर अपने साथ रहने वाले छह लोगों की चाकू मारकर हत्या करने का आरोप है, जिसमें श्रीलंकाई परिवार के चार बच्चे भी शामिल हैं।

द्वारा एक धारदार हथियार इस्तेमाल किया गया था, जिसकी पहचान फेब्रियो डी-जोयसा के रूप में की गई। उस पर हत्या का आरोप लगाया गया है।

स्टब्स ने कहा कि मृतक श्रीलंकाई नागरिक हैं, जो हाल ही में कनाडा आए थे। उन्होंने बताया कि इनमें 35 साल की मां, 7 साल का बेटा, 4 साल की बेटी,

2 साल की बेटी और 2 1/2 महीने की बच्ची भी शामिल है।

पुलिस प्रमुख ने कहा कि जब पहले अधिकारी घर पहुंचे तो परिवार का एक व्यक्ति बाहर था और किसी को 911 पर कॉल करने के लिए चिल्ला रहे थे। पुलिस को रात 10:52 बजे दो आपातकालीन कॉल प्राप्त हुई थी। व्यक्ति गंभीर रूप से चोटिल हैं और अस्पताल में भर्ती हैं।

ओटावा में श्रीलंका के उच्चायोग ने पुष्टि की है कि पीड़ित श्रीलंकाई नागरिकों का परिवार थे। उच्चायोग ने कहा कि व्यक्ति तो बच गया, लेकिन उनकी पत्नी और बच्चों की मौत हो गई।

बाज नहीं आ रहा मालदीव, अब सुरक्षा बल ने कहा- भारतीय कर्मी उसके निर्देशन में करेंगे कार्य

माले, एजेंसी। मालदीव के सुरक्षा बल ने कहा है कि वह भारत द्वारा दिए गए हेलीकाप्टर का संचालन करेगा और भारतीय तकनीक विशेषज्ञ भी उसके निर्देशन में कार्य करेंगे। यह बात मालदीव नेशनल डिफेंस फोर्स (एमएनडीएफ) के कर्नल अहमद मुजुथबा मुहम्मद ने कही है।

एमएनडीएफ की ओर से यह बयान तब आया है जब मालदीव से भारतीय सैनिकों की वापसी और उनके स्थान पर तकनीक विशेषज्ञों की तैनाती की प्रक्रिया चल रही है। कर्नल मुहम्मद ने कहा, राष्ट्रपति मुहम्मद मुइज्जु ने फैसला किया है कि दस मई के बाद कोई भी विदेशी सैनिक मालदीव में नहीं रहेगा।

पिछले हफ्ते भारत ने कहा था कि आधुनिक हेलीकाप्टर के संचालन के लिए तकनीक विशेषज्ञों का पहला दल मालदीव पहुंच गया है। यह दल हेलीकाप्टर संचालन की जिम्मेदारी सैन्यकर्मियों से लेगा जिन्हें वापस भारत लौटना है। यह जानकारी 29 फरवरी को भारतीय विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता

रणधीर जैसवाल ने दी थी। दोनों देशों के अधिकारियों के बीच दो दौर की वार्ता में सैन्यकर्मियों को दस मई तक वापस बुलाने और उनके स्थान पर तकनीक विशेषज्ञों को मालदीव भेजने पर सहमति बनी थी। सैन्यकर्मियों के स्थान पर तकनीक विशेषज्ञों की तैनाती की प्रक्रिया दो चरणों में पूरी होनी है। भारत और मालदीव के संबंधों में तनाव नवंबर 2023 में मुइज्जु के राष्ट्रपति बनने के बाद आया है। चीन की ओर झुकाव वाले मुइज्जु ने समझौते के तहत विभिन्न कार्यों के लिए मालदीव में तैनात 88 भारतीय सैनिकों को बुलाने के लिए भारत से कहा है।

महिला ऐंकर को छेड़ने लगा सऊदी अरब का रोबोट!

आबुधाबी, एजेंसी। सोशल मीडिया पर वायरल हो रहे सऊदी अरब के एक रोबोट को लेकर खूब बहस चल रही है। वीडियो में देखा जा सकता है कि रोबोट की जानकारी देने पहुंची टीवी रिपोर्टर के साथ रोबोट ने कुछ ऐसी हरकत की कि वह असहज हो गई। सोशल मीडिया पर बहुत सारे लोगों ने रोबोट की इस हरकत पर आपत्ति जताई है। बता दें कि यह सऊदी अरब का पहले मेल ह्यूमनॉइड रोबोट है। इसका नाम ऐंड्रॉइड मोहम्मद है।

सोशल मीडिया पर सात सेकंड का वीडियो वायरल हो रहा है जिसमें देखा जा सकता है कि महिला ऐंकर के सामने एआई रोबोट खड़ा है। इसी दौरान रोबोट का हाथ कुछ इस तरह चलता है कि यह महिला एंकर के लिए असहज स्थिति पैदा कर देता है। इस वीडियो को लेकर लोग सोशल मीडिया पर अपनी-अपनी राय दे रहे हैं। बहुत सारे यूजर्स का कहना है कि यह रोबोट का सामान्य मूवमेंट था। जबकि बहुत सारे लोगों का कहना है कि रोबोट को कंट्रोल करने वाले की वजह से यह स्थित बनी।

एक यूजर ने कहा, यहेक सामान्य मूवनेंट

था। संयोग से महिला ऐंकर उस वक्त रोबोट के बेहद करी थी। इसलिए ऐसा लगा कि वह महिला को छू रहा है। एक दूसरे यूजर ने कहा, सऊदी अरब का रोबोट क्या-क्या कर लेता है? एक अन्य यूजर ने कहा, यह निश्चित तौर पर छेड़छाड़ है। जिसने भी रोबोट को प्रोग्राम किया है यह उसकी गलती है।

रिपोर्ट्स के मुताबिक सऊदी का यह नया रोबोट इंसानों के कई काम कर सकता है। वहीं खथरनाक जगहों पर भी यह किसी अभियान को अंजाम देने में कारगर है। सुरक्षा के लिए भी रोबोट का इस्तेमाल किया जा सकता है।

इजराइली हमलों से तबाह गाजा रोटी-रोटी को मोहताज, यूएन ने की निंदा

जिनेवा , एजेंसी। गाजा पर इजराइल द्वारा किया जा रहा हमला थमने का नाम नहीं ले रहा है। इसी कड़ी में इजराइल ने गाजा में खाद्य प्रणाली को पूरी तरह से तहस-नहस कर दिया है, जिसकी वजह से अब वहां लोग भूखे मरने की कगार पर आ चुके हैं। इजराइल के इस कदम की संयुक्त राष्ट्र संघ ने आलोचना की है। यूएन ने गाजा में जारी भूखमरी को रोकने का आग्रह किया है। न्यूज एजेंसी सिन्हुआ की रिपोर्ट के मुताबिक, गुरुवार को संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार परिषद के 55वें सत्र में विशेष दूत माइकल फाखरी ने कहा कि इजराइली बमबारी में गाजा के 15 फीसद अधिक मत्स्य पालन क्षेत्र तबाह हो चुके हैं।

वहीं, एक विशेषज्ञ ने कहा कि इजराइल ने गाजा में रहने वाले फिलिस्तीनियों के खिलाफ भूखमरी अभियान चलाया है। इस अभियान के अंतर्गत इजराइल लगातार गाजा के मत्स्य पालन क्षेत्र को निशाना बना रहा है। उन्होंने कहा कि 7 अक्टूबर 2023 से इजराइल ने सभी समुद्री मार्गों को बंद कर दिया है। उन्होंने कहा, इजराइली सैनिकों ने गाजा के सभी बंदरगाहों और मत्स्य पालन के सभी ठिकानों को भी नेस्तनाबूत कर दिया। रफा में 40 में से अब दो नाव ही सुरक्षित बचे हैं। खान यूनिस में इजराइल 75 फीसद से भी अधिक मत्स्य पालन के क्षेत्रों को तबाह कर चुका है। फाखरी ने कहा कि एन्क्लेव में मछली पकड़ने की आजीविका के विनाश ने गाजा में लोगों के लिए भोजन के अधिकार को कमजोर कर दिया है और उन्हें भूख और भुखमरी में धकेल दिया है।

संयुक्त राष्ट्र ने मंगलवार को इजराइली

सैनिकों के हमले की निंदा की थी। दरअसल, सैनिकों ने बीते 29 फरवरी को गाजा के दक्षिण-पश्चिमी में आटा लेने के लिए एकत्रित हुए फिलिस्तीनियों पर हमला कर दिया था। इस हमले की जद में आकर 112 लोग मारे गए थे। वहीं, 760 बुरी तरह जख्मी हो गए थे।

92 साल के रूपर्ट मर्डोक 5वीं बार बनेंगे दूल्हा, रशियन गर्लफ्रेंड से करेंगे शादी

वाशिंगटन , एजेंसी। रूपर्ट मर्डोक ने अपनी प्रेमिका एलेना झुकोवा से सगाई कर ली है। 92 साल के रूपर्ट पांचवीं बार शादी करने जा रहे हैं। शादी कैलिफोर्निया में उनके वाइनयार्ड और एस्टेट, मोरागा में होगी। बता दें कि रूपर्ट मर्डोक के फॉक्स और न्यूज कॉर्प के अध्यक्ष पद से हटने के कुछ ही महीने बाद उन्होंने यह घोषणा की है।

67 साल की ऐलेना जुकोवा मॉस्को, रूस से हैं। वह मॉलूक्यूलर बायोलजिस्ट रह चुकी हैं। ऐलेना ने रूपर्ट मर्डोक को पिछले साल से डेट करना शुरू किया था। दोनों की मुलाकात रूपर्ट मर्डोक की तीसरी पत्नी वेंडी डेंग के जरिए हुई थी। रूपर्ट की चौथी शादी एक्ट्रेस और मॉडल जेरी हॉल से हुई थी। 6 साल बाद यानी 2022 में दोनों ने तलाक ले लिया था। उनके अन्य पूर्व पत्नी ऑस्ट्रेलियाई फ्लाइट अटेंडेंट पेट्रीसिया बुकर, स्कॉटिश मूल की पत्रकार अन्ना मान,मिस डेंग और अमेरिकी मॉडल और अभिनेत्री जेरी हॉल थीं।

रूपर्ट मर्डोक ने 1950 के दशक में ऑस्ट्रेलिया में अपना करियर शुरू किया। वह मीडिया के सबसे प्रभावशाली, सफल और विवादास्पद शख्सियतों में से एक हैं। मर्डोक को 1952 में अपने पिता से एक छोटा सा ऑस्ट्रेलियाई अखबार विरासत में मिला। उन्होंने तेजी से उसका विस्तार किया और टेलीविजन में कदम रखा। मर्डोक ने 1960 के दशक में यूके के बाजार में प्रवेश किया, न्यूज ऑफ द वर्ल्ड और द सन जैसे समाचार पत्रों को खरीदा और सनसनीखेज टैब्लॉयड में बदल दिया। अमेरिकी मीडिया में अपने विस्तार को सुविधाजनक बनाने के लिए मर्डोक 1985 में अमेरिकी नागरिक बने।

2011 में न्यूज ऑफ द वर्ल्ड राजनेताओं, मशहूर हस्तियों और यहां तक कि अपराध पीड़ितों के फोन हैकिंग में का मामला सामने आया। इस घोटाले के कारण अखबार बंद हो गया और मर्डोक की प्रतिष्ठा धूमिल हो गई। मर्डोक के आउटलेट्स, विशेष रूप से फॉक्स न्यूज पर भारी पक्षपातपूर्ण रिपोर्टिंग, रूढ़िवादी

दृष्टिकोण को बढ़ावा देने और अक्सर गलत सूचना फैलाने का आरोप लगाया जाता है। पिछले साल, रूपर्ट मर्डोक ने अपनी कंपनी की सारी बागडोर अपने बेटे लाचलान को सौंप दी।

भारत जैसे सहयोगियों के साथ अपनी साझेदारी को और मजबूत कर रहे- जो बाइडेन

वाशिंगटन, एजेंसी। अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडन ने कहा कि उनका देश अनुचित आर्थिक व्यवहार, ताइवान जलडमरूमध्य में शांति व सुरक्षा के लिए चीन के खिलाफ खड़ा है और भारत जैसे सहयोगियों के साथ अपनी साझेदारी को और मजबूत कर रहा है। नवंबर में होने वाले राष्ट्रपति पद के चुनाव से पहले अपने आखिरी स्टेट ऑफ द यूनियन संबोधन में बाइडन ने कहा कि अमेरिका, चीन के साथ प्रतिस्पर्धा चाहता है न कि टकराव।

उन्होंने गुरुवार को अमेरिकियों को बताया कि देश बीजिंग के खिलाफ 21वीं सदी में प्रतिस्पर्धा जीतने के लिए मजबूत स्थिति में है। उन्होंने कहा, हम चीन के अनुचित आर्थिक कदमों और ताइवान जलडमरूमध्य में शांति व सुरक्षा के लिए उसके खिलाफ खड़े हैं और साथ ही सहयोगियों और प्रशांत क्षेत्र के देशों भारत, ऑस्ट्रेलिया, जापान तथा दक्षिण कोरिया के साथ अपनी साझेदारी को मजबूत बना रहे हैं।

बाइडन ने कहा, वर्षों से, मैंने अपने रिपब्लिकन मित्रों और कई अन्य लोगों से सुना है कि चीन आगे बढ़ रहा है और अमेरिका पीछे जा रहा है लेकिन यह उल्टा है। अमेरिका आगे बढ़ रह है।

संपादकीय

चुनौती भरी राह

यह हकीकत है कि पंजाब पर बढ़ते कर्ज के बोझ के बीच पेश वार्षिक बजट में राज्य सरकार ने लोकलुभावन घोषणाएं करने से परहेज किया है। इसके बावजूद राज्य सरकार ने अपनी प्राथमिकताओं का खुलासा किया है। पंजाब की आप सरकार के वित्त मंत्री हरपाल चीमा ने संतुलन बनाने का प्रयास करते हुए राज्य के 2024-25 के बजट में शिक्षा और स्वास्थ्य पर सरकार का ध्यान केंद्रित किया है। बजट का कुल परिव्यय दो लाख करोड़ से अधिक हो गया है। हालांकि, आम चुनाव के तरफ बढ़ते देश में नये कर लगाने से परहेज किया गया है। लेकिन राज्य की खस्ता आर्थिक स्थिति के बीच आप सरकार अपने चुनावी वादे के अनुसार 18 वर्ष से अधिक उम्र की महिलाओं को प्रति माह एक हजार रुपये की राशि देने के मुद्दे पर निर्णायक पहल नहीं कर पायी। इस बाबत फैसले का पंजाब की महिलाएं बेसब्री से इंतजार कर रही थीं। हाल ही में हिमाचल की सुक्खू सरकार ने अपने राज्य में महिलाओं से किये गए ऐसे वादे के क्रियान्वयन की घोषणा कर दी है। पंजाब में यह उम्मीद इसलिये भी बढ़ गई थी क्योंकि राष्ट्रीय राजधानी में आप की ही सरकार ने ऐसी घोषणा को अपने बजट में शामिल किया है। उम्मीद थी कि पंजाब में भी ऐसी ही पहल होगी। बहरहाल, पंजाब की आप सरकार की इस बात के लिये सराहना की जानी चाहिए कि उसने राज्य में शिक्षा और स्वास्थ्य की देखभाल के लिये पर्याप्त बजट का प्रावधान किया है। स्कूल ऑफ एमिनेंस, स्कूल ऑफ ब्रिलिएंस तथा स्कूल ऑफ हैप्पीनेस की स्थापना की घोषणा निश्चित ही एक सराहनीय पहल है। इसी तरह मिशन समरथ, चिकित्सा शिक्षा में निवेश और राज्य के विश्वविद्यालयों को अनुदान की घोषणा निश्चित रूप से अकादमिक उत्कृष्टता के पोषण के लिये एक समग्र दृष्टिकोण का ही परिचायक है। इसी तरह आम आदमी क्लीनिक की स्थापना और स्वास्थ्य देखभाल के बुनियादी ढांचे में निवेश से ग्रामीण क्षेत्रों की स्वास्थ्य जरूरतों को पूरा करने में मदद मिलेगी। वहीं दूसरी ओर कृषि प्रधानता के लिये पहचान बनाने वाले पंजाब में किसानों से जुड़े मुद्दों को भी संबोधित किया गया है। इसमें ग्लोबल वार्मिंग के संकट के बीच फसल विविधीकरण और भूजल के लगातार बढ़ते संकट से जुड़े मुद्दों को भी आप सरकार ने अपनी प्राथमिकताओं में शामिल किया है। निस्संदेह, यह पहल राज्य में सतत विकास की दिशा में सार्थक प्रयास कही जाएगी। वहीं दूसरी ओर सरकार ने कभी खेलों का सरताज रहे पंजाब में खेलों को प्रोत्साहन की दिशा में भी कदम बढ़ाए हैं। इसी कड़ी में खेल नर्सरी और खेल विश्वविद्यालयों के लिये वित्त पोषण जैसी पहल भी सराहनीय कदम है। लेकिन इसके बावजूद राज्य पर लगातार बढ़ता कर्ज संकट सरकार की गंभीर चिंता का विषय होना चाहिए। यहां उल्लेखनीय है कि मार्च, 2022 में राज्य पर जो कर्ज 2.73 लाख करोड़ रुपये था, वह जनवरी, 2024 में बढ़कर 3.33 लाख करोड़ रुपये तक जा पहुंचा है। राज्य में राजकोषीय घाटे को लेकर चिंता बनी हुई है। केंद्रीय बैंक आरबीआई की एक रिपोर्ट बताती है कि पंजाब का ऋण से जीडीपी का अनुपात 47.6 फीसदी है। जो राज्यों में दूसरा सबसे बड़ा अनुपात है। यही वजह है कि राज्य सरकार को अपने खर्चे पूरे करने के लिये नये ऋणों की व्यवस्था करनी पड़ रही है। दरअसल, वेतन, पेंशन, ऋण भुगतान तथा बिजली सब्सिडी जैसी प्रतिबद्ध देनदारियां राज्य की राजस्व प्राप्तियों को काफी हद तक प्रभावित कर रही हैं।

नजीर का फैसला

देश की शीर्ष अदालत ने एक बार फिर साबित किया कि वह सही मायनों में देश में स्वच्छ और पारदर्शी लोकतंत्र की रखवाली करने वाली संस्था है। जब शीर्ष अदालत ने महसूस किया कि उसके पहले दिए गए फैसले की विसंगति से लोकतंत्र को हानि हो सकती है तो पहले दिये फैसले को भी पलट दिया। जनतंत्र की परिभाषा को अमली-जामा पहनाते हुए शीर्ष अदालत ने तय कर दिया कि आम आदमी की तरह ही सांसदों व विधायकों को रिश्वत के मामले में छूट के लिये कोई विशेषाधिकार काम नहीं करेगा। सुप्रीम कोर्ट की सात जजों वाली बेंच ने एक मामले में निर्णय सुनाया कि देश की संसद अथवा विधानमंडल में भाषण या वोट के लिये रिश्वत लेने के मामले में सांसदों और विधायकों को विशेषाधिकार के अंतर्गत इम्यूनिटी नहीं दी जा सकती। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि यदि किसी प्रकरण में कोई सांसद अथवा विधायक घूस लेकर किसी मामले में वोट या सदन में लक्षित भाषण देते हैं तो उन पर अदालत में आपराधिक मामला चलाया जा सकता है। कोर्ट ने माना कि संविधान के तहत मिला विशेषाधिकार सदन को सामूहिक रूप से सुरक्षा प्रदान करता है। ताकि जनप्रतिनिधि जनहित में बेखौफ होकर अपनी बात कह सकें और निर्णय ले सकें। इस बाबत अदालत ने माना कि रिश्वत व भ्रष्टाचार लोकतंत्र को घुन की तरह खोखला कर देते हैं। दरअसल, ऐसे मामलों में वर्ष 1998 में आए एक फैसले को जनप्रतिनिधि ढाल बनाते रहे हैं। उल्लेखनीय है कि तब पूर्व प्रधानमंत्री पीवी नरसिम्हा राव सरकार बचाने के मामले में सांसदों की खरीद-फरोख्त के आरोप लगे थे। मामला शीर्ष अदालत पहुंचा था। तब अदालत ने जो फैसला दिया था वह ऐसे प्रकरणों को लेकर फैसले में विसंगति पैदा करने वाला था। उस समय पांच जजों की पीठ ने तीन-दो के बहुमत से रिश्वत लेकर वोट देने वाले सांसदों व विधायकों को विशेषाधिकारी के तहत सुरक्षित बताया था। उल्लेखनीय है कि तब पीवी नरसिम्हा राव वर्सेस भारत गणराज्य मामले में शीर्ष अदालत की बैंच ने माना था कि संसद व विधानमंडल में रिश्वत लेकर वोट देने व भाषण देने के मामले में जनप्रतिनिधियों पर आपराधिक मुकदमा नहीं चलाया जा सकता। दूसरे शब्दों में कहें तो सदन में किए गए किसी कार्य के लिये वे कठघरे में खड़े नहीं करे जा सकते। निश्चित रूप से इससे लोकतंत्रत की शुचिता व पारदर्शिता के लिए विसंगति उत्पन्न हुई थी। सोमवार को दिए फैसले के बाबत मुख्य न्यायाधीश का मानना था कि हम नरसिम्हा राव फैसले से सहमत नहीं है। साथ ही उस फैसले को निरस्त करते हैं जिसमें घूस लेने के मामले में जनप्रतिनिधि बचाव के लिये अपने विशेषाधिकार को कवच बनाएं। पहले का फैसला संविधान के कुछ अनुच्छेदों का अवहेलना भी करता है।

साफ पानी क्यों नहीं बनता चुनावी मुद्दा

विश्वनाथ सचदेव

कई साल पुरानी बात है। विदेश यात्रा के दौरान न्यूयार्क के एक बड़े होटल में जब मैं अपने कमरे में गया तो देखा पीने का पानी नहीं था। मैंने संबंधित कर्मचारी से फोन पर बात की। उसने बताया कि पानी की बोतल तो वह भेज देंगे पर वहां बाथरूम का पानी ही पीने के लिए काम आता है। सब वही पानी पीते हैं। पूरी तरह सुरक्षित है वह पानी पीने के लिए। जब उसने यह बात कही तो उसकी आवाज में एक गर्व की अनुभूति खनक रही थी। आज यह घटना मुझे तब अचानक याद आ गई जब मैं सुबह का अखबार पढ़ रहा था। अखबार के भीतरी पन्नों में एक खबर थी देश में पीने के पानी के बारे में। इस खबर के अनुसार देश के 485 नगरों में से सिर्फ 46 में ही पीने का शुद्ध पानी है। इस आंकड़े के लिए किसी एजेंसी की हवाला दिया गया था। पता, यह कितना सही है पर यह बात तो हम सब जानते हैं कि हमारे देश में धनी तबका घरों में पीने के पानी के लिए मशीनों का उपयोग करता है। आए दिन टीवी पर इस आशय का विज्ञापन देखा जा सकता है कि पीने के शुद्ध पानी के लिए फलां 'वॉटर प्यूरीफायर' का इस्तेमाल करें। बहुत से लोग यह बात बताने वाले सिनेमा के बड़े कलाकार से प्रभावित होकर 'पानी को पीने योग्य' बनाने वाली मशीन खरीद लाते हैं। सच कहें तो शहरी इलाकों में, घरों में ऐसी मशीन का होना एक अनिवार्य आवश्यकता बन गई है। जो इसे नहीं खरीद पाते वे दूषित पानी का शिकार हो जाते हैं। एक अनुमान के अनुसार हमारे देश में प्रतिवर्ष 5 वर्ष से कम आयु के तीन लाख से अधिक बच्चे डायरिया से मरते हैं और यह डायरिया दूषित पानी पीने से ही होता है। अखबार में दूषित पानी वाला यह समाचार पढ़कर मैं चौंका नहीं था। आए दिन इस आशय के समाचार देखने को मिल जाते हैं। इसमें कोई संदेह नहीं कि पीने के पानी को लेकर जागरूकता बढ़ी है। हर घर में 'नल से जल' जैसी योजनाओं का असर भी कुछ देखने को मिल रहा है पर नल के इस पानी की शुद्धता को लेकर आए दिन सवाल उठते रहते हैं। मेरी जिज्ञासा और चिंता तो यह है कि हमारे देश में हम कब गर्व से कह सकेंगे कि गुसलखाने के नल का पानी ही पीने के काम में भी आता है। आज यह सवाल इसलिए भी अधिक मुखर होकर सामने आ रहा है कि शुद्ध पानी जैसा मुद्दा हमारे राजनेताओं को चुनावी मुद्दा क्यों नहीं लगता। हर घर में नल जैसी बात होती है पर उस शिद्दत के साथ नहीं जिसके साथ होनी चाहिए। ऐसा नहीं है कि शुद्ध पानी का मुद्दा कभी उठा नहीं। उठता रहता है अक्सर, पर फिर उतनी ही तेजी से भुला दिया जाता है। अब जो चुनाव सामने आ रहे हैं उनमें हमारे नेताओं के मुंह से कितनी बार शुद्ध पानी का उच्चारण हुआ है? 10 साल पहले गंगा नदी के पानी को शुद्ध बनाने वाला 'नमामि गंगे प्रोजेक्ट' चुनावी चर्चा का मुद्दा बना था, पर इस आधी-अधूरी रह गई परियोजना की बात आज कोई नहीं कर रहा। कोई नहीं पूछ रहा कि करोड़ों की आस्था का प्रतीक बनी 'मां गंगा' का पानी अब तक शुद्ध क्यों नहीं हो पाया अथवा हमारे राजनेताओं ने इस महत्वपूर्ण परियोजना को चुनावी मुद्दा क्यों नहीं बनाया? देश में आम चुनाव का माहौल लगातार गर्मा रहा है। छोटे से छोटे कार्यकर्ता से लेकर प्रधानमंत्री तक नए-नए चुनावी नारे गढ़ने में लगे हैं। दुर्भाग्य से न तो सत्तारूढ़ दल शुद्ध पानी जैसे महत्वपूर्ण मुद्दे की बात कर रहा है और न ही विपक्ष को पीने का पानी चुनावी फसल काटने का माध्यम नजर आ रहा है। विभिन्न क्षेत्रों में विकास के बड़े-बड़े दावे किए जा रहे हैं, मतदाता को लंबे-चौड़े आंकड़ों से भरमाने की कोशिश हो रही है। यह दावे कितने सही हैं, इसकी चिंता कोई नहीं करता। मजे की बात तो यह है कि अक्सर हमारे नेता यह भूल जाते हैं कि पिछली चुनावी सभा में उन्होंने विकास के क्या आंकड़े जनता को बताए थे। मान लिया गया है कि जनता की याददाश्त बहुत कमजोर होती है। जनता भी इस बात की अधिक चिंता करती नजर नहीं आती कि हमारे नेता किस तरह उसे ठगने की कोशिश में लगे रहते हैं। यह हमारी चिंता का विषय बनाना चाहिए। चुनावी सभा में हमारे नेता बड़े-बड़े दावे करते हैं, तीसरी या पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था होने व बनाने के दावे किए जाएं। 'पांच ट्रिलियन' की बात तो की जाती है पर यह कोई नहीं बताता कि इसका मतलब क्या है? इस अर्थव्यवस्था से क्या और कैसे परिवर्तन जनता के जीवन में आएगा, न कोई जानता है न कोई बताता है। विपक्ष गरीबी, भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, महंगाई की बात अवश्य कर रहा है पर सत्तापक्ष के चुनावी गणित में इन समस्याओं के लिए कोई जगह नहीं है। राजनेता बड़ी आसानी से ऐसे मुद्दों की अनदेखी करके आगे बढ़ जाते हैं। लेकिन आज जरूरत है हमारे नेताओं से यह पूछने की कि जीवन के जरूरी मुद्दे चुनाव के लिए जरूरी क्यों नहीं माने जाते? पीने के शुद्ध पानी का मुद्दा क्यों नहीं चुनावी मुद्दा बनता? दशकों तक सत्ता में रहने वाले नेताओं से हम क्यों नहीं पूछते कि नल से जनता को शुद्ध पानी क्यों नहीं मिलता या मिल सकता?

ऐसा ही एक मुद्दा शिक्षा का भी है। स्वतंत्र भारत में साक्षरता की प्रगति से कोई इनकार नहीं कर सकता, पर यह तो पूछा जा सकता है कि हम देश की भावी पीढ़ी को कैसी शिक्षा दे रहे हैं। शिक्षा के क्षेत्र में लगातार सक्रिय स्वयंसेवी संस्था 'असर' साल-दर-साल हमारी शिक्षा के घटिया स्तर को उजागर कर रही है। आश्चर्य की बात है कि सातवीं-आठवीं तक की पढ़ाई करने के बाद भी हमारे विद्यार्थी जोड़-बाकी-गुणा-भाग के सरल सवाल हल नहीं कर पाते। पांचवीं में पढ़ने वाला बच्चा तीसरी की किताब सहजता से नहीं पढ़ पाता। शिक्षा की यह स्थिति चुनाव का मुद्दा क्यों नहीं बनती, या क्यों नहीं बननी चाहिए? आईआईएम और आईआईटी जैसे बड़े शिक्षा संस्थानों के बारे में झूठे-सच्चे आंकड़े तो हमारे नेता सहजता से अपने भाषणों में परोस देते हैं पर प्राथमिक शिक्षा की दुर्दशा की बात कोई नहीं करता। चुनावी बुखार शुरू हो चुका है। नये-नये नारे गढ़े जा रहे हैं। उल्टा-सीधा कुछ भी बोला जा रहा है। ऐसी गारंटी दी जा रही हैं जिनका कोई मतलब नहीं होता। अनर्गल आरोप की राजनीति का यह जो दौर चल रहा है उसमें मतदाता के लिए यह जरूरी हो जाता है कि वह नेतृत्व का दावा करने वालों से यह पूछे कि उसके नल में शुद्ध पानी कब आएगा? उसकी प्राथमिकशाला में योग्य अध्यापक कब नियुक्त होगा? उसके बच्चे का रोजगार कैसे सुरक्षित होगा? महंगाई से कब निजात मिलेगी उसे? यह और ऐसे सवाल हमारी चिंता का विषय कब बनेंगे?

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

बुनियादी ढांचे को मजबूत करने की जरूरत

विकसित भारत का संकल्प

जयंतीलाल भंडारी

हाल ही में प्रधानमंत्री द्वारा मंत्रिपरिषद की बैठक की अध्यक्षता करते हुए 'विकसित भारत - 2047' के लिए दृष्टि पत्र और अगले पांच वर्षों के लिए एक विस्तृत कार्ययोजना पर विचार-मंथन किया गया। 'विकसित भारत' के लिए यह 'रोडमैप' दो साल से अधिक की गहन तैयारी का परिणाम है। इस रोडमैप को तैयार करने में देश के विभिन्न मंत्रालयों, राज्य सरकारों, शिक्षाविदों, उद्योग संगठनों, नागरिक समाज, संस्थाओं, वैज्ञानिक संगठनों के साथ व्यापक परामर्श के लिए आयोजित विभिन्न स्तरों पर करीब 2,700 से अधिक बैठकों, कार्यशालाओं और सेमिनारों के साथ युवाओं से प्राप्त सुझावों की अहम भूमिका रही है। विकसित भारत के लिए इस रोडमैप के लक्ष्यों में आर्थिक विकास, सतत विकास लक्ष्य (एसडीजी), जीवन को आसान बनाना, व्यापार करने में आसानी, बुनियादी ढांचा और सामाजिक कल्याण जैसे क्षेत्र शामिल हैं। 29 फरवरी को राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (एनएसओ) द्वारा जारी रिपोर्ट के मुताबिक वित्त वर्ष 2023-24 की अक्तूबर से दिसंबर के तिमाही में देश का सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) 8.4 फीसदी की तेज दर से बढ़ा है। अब एनएसओ ने चालू वित्त वर्ष 2023-24 के लिए विकास दर का अनुमान बढ़ाकर 7.6 फीसदी कर दिया है। उल्लेखनीय है कि विगत 10 वर्षों में देश की अर्थव्यवस्था दुनिया की शीर्ष पांच अर्थव्यवस्थाओं में शामिल हो गई है। माना जा रहा था कि भारत 2026 में जापान को पीछे कर दुनिया की चौथी बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगा। पिछले दिनों भारतीय अर्थव्यवस्था पर जारी विस्तृत रिपोर्ट 'द इंडियन इकोनॉमी ए रिव्यू' में कहा गया है कि वर्ष 2027 साल में ही भारतीय अर्थव्यवस्था पांच ट्रिलियन डॉलर की हो जाएगी और भारत आर्थिक आकार के लिहाज से अमेरिका व चीन के बाद दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगा। पिछले एक दशक में साहसिक आर्थिक निर्णयों ने देश की आर्थिक बुनियाद को मजबूत बना दिया है। भारत के पास आज टिकाऊ विकास के अभूतपूर्व अवसर हैं। तेजी से बढ़ते भारतीय बाजार के कारण दुनिया के अधिकांश देशों की भारत के साथ मुक्त व्यापार समझौता (एफटीए) की ललक, प्रवासी भारतीयों द्वारा पिछले वर्ष 2023 में 125 अरब डॉलर से अधिक धन भारत को भेजने के साथ नए आर्थिक तकनीकी विकास के लिए बढ़ते कदम, चीन के प्रति बढ़ती नकारात्मकता के मद्देनजर भारत नए वैश्विक आपूर्तिकर्ता देश के रूप में उभरकर सामने आया है। दुनिया में मजबूत लोकतंत्र और स्थिर सरकार के रूप में भारत की पहचान, दुनिया की सबसे बड़ी युवा आबादी, देश में उत्पादन से जुड़े प्रोत्साहन, बड़े पैमाने पर पूंजीगत खर्च, गैर-जरूरी आयात में कटौती और अर्थव्यवस्था के बाहरी झटकों से उबरने की क्षमता देश के टिकाऊ विकास की बुनियाद बन सकती हैं। शेयर बाजार भी दुनिया में ऊंचाइयों पर रेखांकित होते हुए दिखाई दे रहा है। भारत द्वारा पिछले वर्ष 2023 में की गई जी-20 की सफल अध्यक्षता से भारत के लिए अब नए आर्थिक लाभों की श्रृंखला शुरू हो गई है। इससे भारत से निर्यात, भारत में विदेशी निवेश, भारत में विदेशी पर्यटन और भारत के डिजिटल विकास का नया क्षितिज सामने आ रहा है। ज्ञातव्य है कि वैश्विक स्तर पर प्रत्यक्ष विदेशी निवेश में गिरावट के रुझान के बीच भारत दुनिया के सर्वाधिक एफडीआई प्राप्त करने वाले 20 देशों की सूची में आठवें पायदान पर है। भारत का विदेशी मुद्रा भंडार भी मार्च, 2024 की शुरुआत में करीब 620 अरब डॉलर की ऊंचाई पर पहुंच गया है। निस्संदेह, देश को कई आर्थिक चुनौतियों पर भी ध्यान देना होगा। देश के सामने डॉलर की तुलना में रुपये के गिरते हुए मूल्य की चुनौती भी है। भारत को आईएमएफ की उस चेतावनी पर भी ध्यान देना होगा जिसमें कहा गया है कि भारत में केंद्र और राज्यों का सामान्य सरकारी कर्ज जीडीपी के 100 फीसदी के पार पहुंच सकता है। साथ ही भारत के आर्थिक रणनीतिकारों को वैश्विक आर्थिक प्रतिकूल परिस्थितियों के मद्देनजर रक्षात्मक रणनीति बनाने के लिए भी तैयार रहना होगा। कोशिश हो कि हमारे स्कूल, कॉलेज और विश्वविद्यालय नई पीढ़ी को भविष्य की जरूरतों से सुसज्जित करने के गढ़ बनें। छोटे और मध्यम उद्योगों, कृषि एवं हैंडीक्राफ्ट सेक्टर के लिए मार्केटिंग की नई रणनीति बनाई जाए। इससे रोजगार और निर्यात भी बढ़ेंगे। हम उम्मीद करें कि विकसित भारत के लक्ष्य के साथ आने वाली सरकार आर्थिक और वित्तीय सुधार, कृषि और श्रम सुधार, शिक्षा और स्वास्थ्य की गुणवत्ता के साथ-साथ मजबूत बुनियादी ढांचे की मजबूती पर भी ध्यान दे। ऐसे रणनीतिक कदमों से देश वर्ष 2027 तक दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था और वर्ष 2047 तक दुनिया का विकसित राष्ट्र बनने की डगर पर तेजी से आगे बढ़ता हुआ दिखाई दे सकेगा।

लेखक अर्थशास्त्री हैं।

न्यायपालिका की निष्पक्षता दांव पर

(लेखक- सनत जैन)

कोलकाता हाईकोर्ट के पूर्व जज अभिजीत गंगोपाध्याय द्वारा भारतीय जनता पार्टी की सदस्यता लेने और चुनाव लड़ने की घोषणा की है। उसके बाद न्यायपालिका की निष्पक्षता को लेकर एक बार फिर सारे देश में बवाल शुरू हो गया है। उनका इस्तीफा मंजूर भी नहीं हुआ था। उसके पहले ही उन्होंने कह दिया, कि वह भाजपा के संपर्क में थे। वह लोकसभा का चुनाव लड़ना चाहते हैं। पश्चिम बंगाल हाईकोर्ट के न्यायाधीश के रूप में उन्होंने ममता बनर्जी की सरकार और उनकी पार्टी के प्रवक्ताओं के खिलाफ खुलकर आलोचना की। पिछले दो वर्षों में उन्होंने जो फैसले दिए उसमें से लगभग 14 फैसला पश्चिम बंगाल सरकार के खिलाफ थे। हाईकोर्ट में उनके द्वारा दिए गए फैसले एक राजनैतिक पार्टी के पक्ष में गये। न्यायाधीश के पद पर रहते हुए उन्होंने मीडिया मे टीएमसी सरकार की आलोचना की। हाईकोर्ट के न्यायाधीश रहते हुए उन्होंने सुप्रीम कोर्ट को भी नोटिस जारी करने में कोई कोताहि नहीं बरती। इससे स्पष्ट है, कि उनके केंद्र सरकार से जुड़े हुए तार बहुत मजबूत थे। पश्चिम बंगाल हाई कोर्ट में जज रहते हुए उनके फैसले उनका व्यवहार और अब वहीं से लोकसभा का चुनाव लड़ने की घोषणा से, न्यायपालिका की निष्पक्षता को लेकर बड़ी तीव्र प्रतिक्रिया हो रही है। सुप्रीम कोर्ट के जिन पांच जजों ने राम मंदिर निर्माण का फैसला सुनाया था। उन जजों में पूर्व मुख्य न्यायाधीश रंजन गोगोई, पूर्व सीजेआई शरद अरविंद बोबडे, वर्तमान सीजे डीवाई चंद्रचूड़ पूर्व न्यायाधीश अशोक भूषण और न्यायमूर्ति एस अब्दुल नजीर शामिल थे। पूर्व मुख्य न्यायाधीश रंजन गोगोई वर्तमान में राज्यसभा के सदस्य हैं। उन्हें भाजपा ने मनोनीत किया। डीवाई चंद्रचूड़ वर्तमान में सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश है। न्यायाधीश एस अब्दुल नजीर को राज्यपाल बनाया गया है। राम मंदिर निर्माण का फैसला देने वाले सभी जज सेवा निवृत्ति के बाद सरकार द्वारा तुरंत उपकृत किए गए हैं। अभी तक हाईकोर्ट और सुप्रीम कोर्ट के जजों की राजनीतिक निष्ठा और उनके फैसलों को लेकर दबे छुपे प्रतिक्रिया आती रही है। जिस तरह से अभिजीत गंगोपाध्याय ने समय पूर्व सेवा निवृत्ति लेकर भाजपा से लोकसभा का चुनाव लड़ने का निर्णय लिया। पिछले दो वर्षों में उन्होंने जो फैसला ममता बनर्जी की सरकार के खिलाफ हुए हैं वह विवाद में आ गये है। क्या हाईकोर्ट और सुप्रीम कोर्ट से निष्पक्ष न्याय मिलना संभव नहीं रहा। हालांकि यह भी कहा जाता है, कि कभी कोई व्यक्ति निष्पक्ष नहीं होता है। न्यायाधीश भी कहीं ना कहीं किसी विचारधारा या आस्था से बंधा हुआ होता है। इसके बाद भी गुण दोष के आधार पर न्यायपालिका नियमों को ध्यान में रखते हुए निर्णय करती है। हाईकोर्ट और सुप्रीमकोर्ट के प्रति लोगों की आस्था बनी हुई थी। अब जिस तरह के निर्णय न्यायापालिका में केंद्र सरकार और राज्य सरकारें जहां भाजपा की सरकारे हैं। अथवा जिन राज्यों में विपक्षी दलों की सरकारें हैं। वहां की हाईकोर्ट से भाजपा के पक्ष में जो फैसले आ रहे हैं। उसके बाद से न्यायपालिका की साख को लेकर सारे देश में असमजंस का माहौल बनने लगा है। हाईकोर्ट और सुप्रीम कोर्ट में किस तरह का फैसला कौन सा जज देगा। इसका अनुमान पहले ही लगा लिया जाता है। न्यायपालिका के ऊपर सरकार का भय, दबाव और विचारधारा को लेकर तरह-तरह की बातें हो रही हैं। हाईकोर्ट और सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीश मुखर होकर डायस पर बैठकर जिस तरह की टिप्पणी कर रहे हैं, आधे अधूरे फैसला दे रहे हैं। जमानत के मामले कई महीनों और वर्षों तक पेंडिंग रखे जा रहे हैं। उससे न्यायपालिका की साख आम जनता के मन में खत्म होती जा रही है। न्यायाधीशों का राजनीति के मैदान में उतरना, सेवा निवृत्ति के तुरंत बाद या समय पूर्व इस्तीफा देकर राजनीति में आना न्यायपालिका की विश्वसनीयता को खत्म कर रहा है। गंगोपाध्याय का यह कहना कि उसके भाजपा नेताओं के साथ पहले से ही संपर्क बने हुए थे। इससे बड़ी अनैतिकता और क्या हो सकती है। कार्यपालिका और विधायिका द्वारा किए गए कार्यों के बारे में न्यायपालिका द्वारा ही सही या गलत का निर्णय किया जाता है। लगभग 80 फ़ीसदी मुकदमे में सरकार संबधित होते है। प्रभावित व्यक्ति न्यायालयों से न्याय मिलने की आशा रहती थी। हाईकोर्ट ओर सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीश यदि सरकार के दबाव में आकर या सरकार से प्रभावित होकर फैसला करने लगेंगे। तो संविधान और लोकतंत्र को सुरक्षित रख पाना संभव नहीं होगा। वर्तमान में जांच एजेंसियां और सरकारी विभाग मनमानी कर रहे हैं। लोगों को महीनो और वर्षों तक जेलों में बंद करके रखा जा रहा है। सरकार की आलोचना करने पर नागरिकों को देशद्रोह के आरोप में वर्षों तक जेलों में बंद रखा जा रहा है। न्यायपालिका का सिद्धांत है, जेल अपवाद है, जमानत नागरिक का अधिकार है। यदि यह अधिकार खुद न्यायपालिका छीन रही है। ऐसी स्थिति में अब न्यायपालिका और नागरिक के भाग्य का भगवान ही मालिक है। जब-जब इस तरीके की स्थितियां पैदा होती हैं। उसके बाद अराजकता बढ़ती है। लोग कानून को अपने हाथ में लेने लगते हैं। सरकार और जनता के बीच में विरोध बढ़ता है।

अंबानी के फंक्शन में ना बुलाए जाने पर राखी ने रोया दुखड़ा

अनंत अंबानी और राधिका मर्चेंट के प्री-वेडिंग फंक्शन में देश-विदेश के बड़े सितारों ने शिरकत की। इसमें पॉप सिंगर रिहाना से लेकर फेसबुक के फाउंडर मार्क जुकरबर्ग ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। इसके साथ ही बॉलीवुड के बड़े स्टार्स भी पार्टी का हिस्सा रहे। इसमें शाहरुख खान, सलमान खान, सिद्धार्थ मल्होत्रा, कियारा आडवाणी, दीपिका पादुकोण, रणवीर सिंह, आलिया भट्ट, रणबीर कपूर, करीना कपूर और सैफ अली खान जैसे अन्य सितारों ने शिरकत की थी। इस दौरान सभी ने अपनी परफॉर्मेंस से पार्टी में चार चांद भी लगाए। ये फंक्शन 1 मार्च से 3 मार्च तक चला था।

ऐसे में अब राखी सावंत ने इस पर अपना रिएक्शन दिया है। उन्होंने मुकेश अंबानी से नाराजगी जताते हुए नजर आईं और कहा कि उन्होंने उन्हें क्यों नहीं बुलाया। चलिए बताते हैं राखी ने क्या कुछ कहा है। दरअसल, अंबानी के फंक्शन और तमाम सेलेब्स के आमंत्रण को लेकर राखी सावंत इंस्टाग्राम पर लाइव हैं।

इस दौरान उन्होंने मुकेश अंबानी से नाराजगी जताई कि उनको पार्टी में क्यों नहीं बुलाया गया। उनका वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। इसमें उन्हें कहते हुए सुना जा सकता है, 'अंबानी जी नमस्ते। आपने मुझे शादी में क्यों नहीं बुलाया।

आपको पता है अगर आप मुझे बुलाते तो मैं फ्लोर तोड़ देती। कुर्सियां तोड़ देती। मेरा डांस अभी तक आपने देखा नहीं है अंबानी जी। ये इन सबको रिहाना, कॉन, आइकॉन ये किन लोगों को आपने बुलाया। मेरे सामने ये सब मूंगफली हैं। आपने क्या मेरा डांस देखा है? मुन्नी बदनाम हुई डार्लिंग तेरे लिए, टुक टुक देखे, परदेसिया ये इतने गाने मैंने किए हैं।'

बर्तन धोती रूम साफ करती- रखी सावंत

इतना ही नहीं राखी सावंत आगे कहती हैं, 'आपने मुझे क्यों नहीं बुलाया। इनको हजार करोड़ देकरके आपने बुलाया। फिर भी रिहाना तो फटे हुए कपड़ों में आई। मैं आती तो इतने हॉट और सेक्सी कपड़े पहनकर आती। मेरे कपड़ों से आपके फ्लोर का पोंछा भी लगाती। मुझे बुलाने के चार-चार फायदे थे। मैं एंटरटेन करती। मैं डांस करती। आपके जितने गेस्ट आए थे, खाना खाने के बाद उनके बर्तन भी धोती। सबके रूम साफ कर देती।

क्या क्या नहीं करती। आपने ये हजार करोड़ खर्च करके किनको बुलाया है। अरे आपने राखी सावंत को नहीं बुलाया है। क्या कर दिया आपने?' अब राखी का ये वीडियो सामने आने के बाद लोग इस पर जमकर रिएक्शन दे रहे हैं।

लोगों ने दी ऐसी प्रतिक्रिया

अब अगर राखी सावंत के वीडियो पर लोगों के रिएक्शन की बात की जाए तो एक ने लिखा, 'इसलिए ही तो नहीं बुलाया, मुजरा नहीं करवाना था ना उनको।' दूसरे ने लिखा, 'उनका बजट कम था इसलिए नहीं बुलाया।

' तीसरे ने लिखा, 'भीख मांगने का तरीका थोड़ा कैजुअल है।' चौथे ने लिखा, 'बस इसी नुकसान की वजह से नहीं बुलाया।' इसके साथ एक अन्य ने लिखा, 'अंबानी जी आपको अफॉर्ड नहीं कर पाए।' इसी तरह से इस पर लोग खूब रिएक्शन दे रहे हैं और राखी सावंत का खूब मजाक उड़ा रहे हैं।

हादसे का शिकार हुई

सारा अली खान

बॉलीवुड एक्ट्रेस सारा अली खान को लेकर हाल ही में एक खबर सामने आई है। खबर है कि फिल्म प्रमोशन के दौरान एक्ट्रेस हादसे का शिकार हो गई हैं। इस बात की जानकारी खुद सारा अली खान ने एक वीडियो शेयर कर दी। शेयर की वीडियो में सारा ने कहा-एक साथ दो-दो फिल्मों का प्रमोशन कर रही हूं और इस दौरान मेरा पेट जल गया है। हालांकि एक्ट्रेस ने इस बात की जानकारी नहीं दी है कि उनके साथ ये हादसा कैसे हुआ है। इस खबर के बाद से ही सारा के फैंस काफी परेशान हैं हालांकि, एक्ट्रेस को देखने के बाद ये अंदाजा लगाया जा सकता है कि उन्हें ज्यादा गंभीर चोटे नहीं आई हैं।

5 साल डेटिंग के बाद

कृति संग फेरे लेंगे पुलकित

सिनेमा जगत में एक के बाद एक सेलेब्स शादी के बंधन में बंध रहे हैं। बीते दिनों रकुल प्रीत और जैकी भगनानी ने शादी की। इसके बाद सुरभि चंद्रा ने बीते दिन ही सात फेरे लिए। इसी बीच अब चर्चा जोरों पर है कि बॉलीवुड का फेवरेट कपल पुलकित सम्राट और कृति खरबंदा शादी करने वाले हैं। हाल ही में दोनों की रोका सेरेमनी हुई थी, जिसके बाद से वेडिंग को लेकर कपल हेडलाइन्स में बरकरार है।

ऐसे में अब इनका वेडिंग कार्ड भी सोशल मीडिया पर सामने आया है। साथ ही शादी के डेट का खुलासा हुआ है। हालांकि, अभी कपल की ओर से इसे लेकर कोई ऑफिशियल स्टेटमेंट जारी नहीं किया गया है। फैंस इस कपल को दुल्हा-दुल्हन बने देखने का बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं। सोशल मीडिया पर सामने आए कृति खरबंदा और पुलकित सम्राट की शादी के कार्ड की बात की जाए तो इसमें प्यार, म्यूजिक और सुंदर सा व्यू दिख रहा है। इसमें देख सकते हैं कपल चेयर पर साथ में बैठे हैं और म्यूजिक के साथ रोमांटिक माहौल बनाया हुआ है। इसे ऐसे बनाया गया है, जैसे कोई घर का सीन बनाया गया है और बालकनी से कपल समंदर के नजरे का लुत्फ उठा रहा है। इसमें कपल के पास उनके डॉग्स हैं। कार्ड पर लिखा है, 'अपने लोगों ने साथ इसे सेलिब्रेट करने का इंतजार नहीं कर सकते। पुलकित और कृति को प्यार दें।' इसके बाद सोशल मीडिया पर बधाइयों का तांता लग गया। इसके साथ ही इंटरनेट पर कुछ लोगों ने दावा किया कि ये पुलकित और कृति की ओर से अभी ऑफिशियल नहीं किया गया है और ना ही ऐसा कुछ कार्ड शेयर किया गया है। वहीं, कुछ लोगों ने कृति को अभी और भी काम करने की सलाह दी है। इसी तरह से लोग इस पर खूब रिएक्शन दे रहे हैं। रूमर्ड वेडिंग कार्ड सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है।

5 साल डेटिंग के बाद किया शादी का फैसला!

आपको बता दें कि पुलकित सम्राट और कृति खरबंदा लंबे समय से रिलेशनशिप में हैं। दोनों पिछले 5 सालों से एक-दूसरे के डेट कर रहे हैं। इनकी लव स्टोरी की बात की जाए तो दोनों के बीच नजदीकियां अनीस बाज्मी की फिल्म 'पागलपंती' के दौरान बढ़ी थी। यहीं से उन्होंने एक-दूसरे को डेट करना शुरू किया था। इनका प्यार 2019 में परवान चढ़ा था। इस फिल्म के प्रमोशन के दौरान दोनों ने अपने रिश्ते की पुष्टि की थी। इतना ही नहीं पुलकित सम्राट की कृति खरबंदा के साथ दूसरी शादी है। वो तलाकशुदा हैं। इससे पहले उन्होंने सलमान खान की मुंहबोली बहन श्वेता रोहिरा के साथ शादी की थी। हालांकि, इनका रिश्ता ज्यादा समय तक नहीं चल पाया था और वो एक साल में ही अलग हो गए थे।

स्ट्रोक से रिकवर होने के बाद वेकेशन पर निकले मिथुन चक्रवर्ती

दिग्गज एक्टर मिथुन चक्रवर्ती को स्ट्रोक की वजह से 10 फरवरी को हॉस्पिटल में एडमिट करवाया गया था। 12 फरवरी को डिस्चार्ज हो गए थे। वहीं अब स्ट्रोक से ठीक होने के बाद मिथुन चक्रवर्ती वेकेशन के लिए निकल गए हैं। इस ट्रिप में उनके साथी बेटे मिमोह और बहू मदालसा बने।

मिथुन की बहू और एक्ट्रेस मदालसा शर्मा ने हाल ही में इसकी झलक दिखाई। उन्होंने एक तस्वीर शेयर की है जिसमें सभी फ्लाइट में बैठे दिख रहे हैं। तस्वीर में मिथुन दा फ्लाइट की खिड़की वाली साइड पर बैठे हैं। वहीं उनके पास में मदालसा और मिमोह हैं। इस दौरान मिथुन काला चश्मा और मास्क लगाए फोन हाथ में लिए दिख रहे हैं। उन्होंने सिर पर कैप भी लगाई है और शॉल भी ओढ़ी हुई है। तस्वीर के कैप्शन में मदालसा ने लिखा- फैमिली लव।

इसके साथ ही फ्लाइट की इमोजी बनाई है। बता दें कि मिथुन चक्रवर्ती की तबियत अब ठीक है। जब मिथुन को हॉस्पिटल से डिस्चार्ज किया गया था तो एक्टर ने कहा था- मैं बिल्कुल ठीक हूं। कोई परेशानी नहीं है। मुझे मेरे खाने पर कंट्रोल करना होगा और जल्द काम भी शुरू कर सकता हूं। इसके अलावा मिथुन चक्रवर्ती को पीएम मोदी ने भी फोन करके हाल-चाल पूछा था। पीएम मोदी ने सेहत का ख्याल न रखने के लिए मिथुन चक्रवर्ती को डांट भी लगाई थी।

ग्रीन स्किनफिट ड्रेस में शहनाज ने दिखाया टोन्ड फिगर

पंजाब की कैटरीना उर्फ शहनाज गिल कौर इंडस्ट्री की उन हसीनाओं में से हैं जो अपने लुक्स से लोगों का दिल जीत ही लेती हैं। जब भी फैशन की बात आती है को हर किसी के जहन में एक नाम आता है और वह है शहनाज गिल। शहनाज गिल सूट से लेकर वेस्टर्न आउटफिट तक हर लुक में कहर ढाती हैं। हाल ही में एक्ट्रेस ने इंस्टाग्राम पर बेहद हॉट तस्वीरें शेयर की हैं जोकि सोशल मीडिया का तापमान बढ़ा रही हैं। सामने आई तस्वीरों में शहनाज ग्रीन कलर की स्किनफिट ड्रेस में अपनी टोन्ड बॉडी फ्लॉन्ट कर रही हैं। शहनाज ने लाइट मेकअप, ग्लोसी लिप्स और ओपन हेयर्स से लुक को पूरा किया है। हसीना कैमरे के सामने एक से बढ़कर एक सेक्सी पोज दे रही हैं।शहनाज की हॉटनेस ने यूजर्स को दीवाना बना दिया है। फैंस शहनाज की इन तस्वीरों को काफी पसंद कर रहे हैं।

नेपोटिज्म पर खुलकर बोलीं श्रिया

बॉलीवुड में कई कलाकार पहले भी नेपोटिज्म पर अपनी बात रख चुके हैं। अब एक्ट्रेस श्रिया सरन ने अपनी बात रखी है। उन्होंने कहा कि बॉलीवुड स्टार शाहरुख खान भी जब इंडस्ट्री में आए थे तो एक आउटसाइडर थे। इनसाइडर-आउटसाइडर बहस के बारे में बात करते हुए श्रिया ने कहा, एक समय हर कोई आउटसाइडर था। शाहरुख खान भी एक आउटसाइडर थे जब उन्होंने इंडस्ट्री में प्रवेश किया था। चीजें अब काफी बदल रही हैं और यह तब तक बदलती रहेंगी जब तक इस पर बहस जारी रहेगी। एक्ट्रेस ने सुझाव देते हुए कहा कि वास्तव में स्क्रीन टेस्ट पर काम करने की जरूरत है। प्रत्येक प्रोडक्शन में स्क्रीन परीक्षण का एक आसान और सरल तरीका होना चाहिए, ताकि यह सभी लोगों के लिए कई दरवाजे खोले। श्रिया अगली बार शोटाइम में दिखाई देंगी, जिसमें इमरान हाशमी, महिमा मकवाना के साथ मौनी रॉय, राजीव खंडेलवाल, विशाल वशिष्ठ, नीरज माधव, विजय

अदा शर्मा ने मंत्रों के उच्चारण से सबको चौंकाया

जब से बस्तर: द नक्सल स्टोरी का ट्रेलर रिलीज हुआ है, तब से लोगों में बड़ी एक्साइटमेंट देखी जा रही है। ट्रेलर ने दर्शकों का ध्यान अपनी तरफ खींचा है और हर तरफ से इसे दर्शकों से पॉजिटिव रिस्पॉन्स मिल रहा है। दर्शक बेसबरी से इस फिल्म का इंतजार कर रहे हैं, जो विपुल अमृतलाल शाह, सुदीप्तो सेन और अदा शर्मा की दमदार तिकड़ी से आई है। जैसी जैसी रिलीज डेट पास आ रही है, फिल्म के लिए उत्साह बढ़ते जा रहा है। हाल ही में ये खुलासा हुआ है कि अदा शर्मा ने फिल्म में आईपीएस नीरजा माधवन का किरदार निभाने के लिए कड़ी मेहनत की है और अपने किरदार के लिए सही टोन सेट करने के लिए एक्ट्रेस ने दंतेश्वरी मां की पूजा कर उनका आशीर्वाद भी लिया है। कुछ दिन पहले ही यह बात सामने आई थी कि अदा शर्मा ने बस्तर में रहकर दंतेश्वरी मां की पूजा-अर्चना सीखी है, और हाल ही में रायपुर में फिल्म के ट्रेलर लॉन्च इवेंट में अदा ने मां के श्लोक और मंत्र पढ़कर सभी को हैरान कर दिया।

ये पहली बार हुआ है भारतीय सिनेमा में जब एक एक्ट्रेस ने फिल्म के ट्रेलर लॉन्च इवेंट पर श्लोक और मंत्र का सेशन अयोजित किया हो, और अदा और टीम बस्तर- द नक्सल स्टोरी ने अपने अप्रोच से दिल जीत लिया है। आदा शर्मा ने बस्तर में अपने किरदार की हर छोटी-मोटी बात पर ध्यान दिया है, और इसका बड़ा क्रेडिट विपुल अमृतलाल शाह को जाता है। एक जिम्मेदार फिल्ममेकर और निर्माता के रूप में, विपुल किसी भी पहलू पर कमी नहीं करते और अपनी फिल्मों के कास्ट को किरदारों के लिए कठिन तैयारियों में शामिल करते हैं। सुदीप्तो सेन के डायरेक्शन में बनी फिल्म के ट्रेलर में अदा शर्मा को अपने बेजोड़ अंदाज में देखा जा सकता है।

9 मार्च से सोनी एंटरटेनमेंट टेलीविजन पर शुरू होगा सुपरस्टार सिंगर 3

मुंबई।

सोनी एंटरटेनमेंट टेलीविजन पर 09 मार्च से देसी सिंगिंग रियलिटी शो सुपरस्टार सिंगर 3 शुरू होगा। सुपरस्टार सिंगर 3 में पॉप सेंसेशन नेहा कक्कड़ सुपर जज के रूप में शामिल होंगी और कैप्टन-सलमान अली, पवनदीप राजन, अरुणिता कांजीलाल, मोहम्मद दानिश और सायलीकांबले प्रतिभागियों को अपना संगीत का ज्ञान देंगे और उनकी संगीत प्रतिभा निखारेंगे। उत्तर

प्रदेश के पीलीभीत के 13 वर्षीय क्षितिज सक्सेना ने सतरंगा का एक इमोशनल वर्शन प्रस्तुत किया। उन्हें न सिर्फ सभी से स्टैंडिंग ओवेशन मिला, बल्कि सुपर जजनेहा कक्कड़ की आंखों से भी खुशी के आंसू छलक पड़े। इस परफॉर्मेंस से अभिभूत होकर, कप्तान मोहम्मद दानिश क्षितिज को उनके दिल छू लेने वाले प्रदर्शन के लिए उन्हें गले लगाया।

नेहा कक्कड़ ने बताया, क्षितिज, जो तेरे संग लगे, वो हे जो पीपल के धागे - वह हिस्सा बिल्कुल जबर्दस्त था, इसने सभी सही सुरों को छुआ। आपके गायन ने मुझे गहराई से छू लिया है और मेरे रोंगटे खड़े हो गए हैं। क्षितिज, आपभीतर से खुशी लाते हैं, और आपकी मासूमियत, आपकी गायन शैली के साथ मिलकर, विशेष रूप से ऐसे कठिन गीत केलिए महान अभ्यास और जिम्मेदारी के साथ आती है। आपकी सिंगिंग मेरी आंखों में आंसू ले आई और मेरा दृढ़ विश्वास है कि आपका स्टार बनना तय है। इसे बरकरार रखो

कैप्टन मोहम्मद दानिश ने कहा,तुमने मेरा दिल जीत लिया, क्षितिज, मुझे तुम्हारी परफॉर्मेंस पर बेहद गर्व है।

जन्मदिवस 08 मार्च पर विशेष - गीतकारों के लिये रॉयलटी की व्यवस्था करायी साहिर लुधियानवी ने

मुंबई। साहिर लुधियानवी हिन्दी फिल्मों के ऐसे पहले गीतकार थे जिनका नाम रेडियो से प्रसारित फरमाइशी गानों में दिया गया। साहिर से पहले किसी गीतकार को रेडियो से प्रसारित फरमाइशी गानों में श्रेय नहीं दिया जाता था।इसके अलावा वह पहले गीतकार हुये जिन्होंने गीतकारों के लिये रॉयलटी की व्यवस्था करायी।

आठ मार्च 1921 को पंजाब के लुधियाना शहर में एक जमींदार परिवार में जन्में साहिर की भजदगी काफी संघर्षों में बीती है। साहिर ने अपनी मैट्रिक तक की पढ़ाई लुधियाना के खालसा स्कूल से पूरी की। इसके बाद वह लाहौर चले गये जहां उन्होंने अपनी आगे की पढ़ाई सरकारी कॉलेज से पूरी की।कॉलेज के कार्यक्रमों में वह अपनी गजलें और नज्में पढ़कर सुनाया करते थे जिससे उन्हें काफी शोहरत मिली। जानी-मानी पंजाबी लेखिका अमृता प्रीतम कॉलेज में साहिर के साथ ही पढ़ती थीं जो उनकी गजलों और नज्मों की मुरीद हो गयीं और उनसे प्यार करने लगीं लेकिन कुछ समय के बाद ही साहिर कॉलेज से निष्कासित कर दिये गये। इसका कारण यह माना जाता है कि अमृता प्रीतम के पिता को साहिर और अमृता के रिश्ते पर ऐतराज था क्योंकि साहिर मुस्लिम थे और अमृता सिख थीं। इसकी एक वजह यह भी थी कि उन दिनों साहिर की माली हालत भी ठीक नहीं थी।

साहिर 1943 में कॉलेज से निष्कासित किये जाने के बाद लाहौर चले आये जहां उन्होंने अपनी पहली उर्दू पत्रिका 'तल्खियां' लिखीं। लगभग दो वर्ष के अथक प्रयास के बाद आखिरकार उनकी मेहनत रंग लायी और 'तल्खियां' का प्रकाशन हुआ। इस बीच साहिर ने प्रोग्रेसिव रायटर्स एसोसियेशन से जुड़कर आदाबे लतीफ, शाहकार, और सवेरा जैसी कई लोकप्रिय उर्दू पत्रिकाएं निकालीं लेकिन सवेरा में उनके क्रांतिकारी विचार को देखकर पाकिस्तान सरकार ने उनके खिलाफ गिरफ्तारी का वारंट जारी कर दिया।

श्यामा प्रसाद मुखर्जी बंदरगाह के लिए 800 करोड़ की परियोजना मंजूर

नई दिल्ली । केंद्रीय बंदरगाह, पोत परिवहन एवं जलमार्ग मंत्री सर्बानंद सोनोवाल ने कोलकाता में श्यामा प्रसाद मुखर्जी बंदरगाह को बेहतर बनाने के लिए 800 करोड़ रुपये से अधिक की परियोजना को मंजूरी दे दी। आधिकारिक बयान के अनुसार मंत्रालय ने महत्वाकांक्षी परियोजनाओं में से एक श्यामा प्रसाद मुखर्जी बंदरगाह के नेताजी सुभाष डॉक ऑफ केडीएस की गोदी संख्या आठ के पुनर्निर्माण और गोदी संख्या सात और आठ के मशीनीकरण को मंजूरी दे दी है। बयान में कहा गया है कि स्वीकृत परियोजना को सार्वजनिक-निजी भागीदारी (पीपीपी) के माध्यम से डिजाइन, निर्माण, वित्त, संचालन और हस्तांतरण (डीबीएफओटी) आधार पर क्रियान्वित किया जाएगा। इसमें कहा गया है कि परियोजना की अनुमानित लागत 809.18 करोड़ रुपये है।

ओडिशा सरकार ने 80,125 करोड़ की सात प्रमुख परियोजनाओं को मंजूरी दी

भुवनेश्वर। ओडिशा सरकार ने 80,125 करोड़ रुपये के निवेश वाली विभिन्न प्रकार की सात प्रमुख परियोजनाओं को मंजूरी प्रदान कर दी है। अधिकारियों ने बताया कि मुख्यमंत्री नवीन पटनायक की अध्यक्षता में उच्च स्तरीय मंजूरी प्राधिकरण (एचएलसीए) की हाल ही में हुई बैठक में इन परियोजनाओं को मंजूरी दी गई। उन्होंने बताया कि इन परियोजनाओं से इस्पात, हरित ऊर्जा, दवा और रसायन सहित विभिन्न क्षेत्रों में 24,552 लोगों के लिए रोजगार के अवसर पैदा होने की उम्मीद है। उन्होंने कहा कि ये परियोजनाएं खुर्दा, जगतसिंहपुर, झारसुगुड़ा, गंजम और भद्रक जिलों में हैं। इनमें ग्रैन्यूल्स लाइफ साइंसेज प्राइवेट लिमिटेड, ग्रैन्यूल्स सीजेडआरओ प्राइवेट लिमिटेड, ईंजी सोलविन हाइब्रिड प्राइवेट लिमिटेड, एसीएमई ग्रीनटेक ऊर्जा प्राइवेट लिमिटेड, वारी क्लीन एनर्जी सॉल्यूशंस प्राइवेट लिमिटेड, एक्शन इस्पात और ओएफबी टेक प्राइवेट लिमिटेड की परियोजनाएं शामिल हैं।

जेएम फाइनेंशियल ने कहा- सेबी की जांच में पूरा करेंगे सहयोग

नई दिल्ली (ईएमएस)। जेएम फाइनेंशियल लिमिटेड ने ऋण प्रतिभूतियों के सार्वजनिक निर्गम को लेकर पूंजी बाजार नियामक सेबी की जांच में पूरा सहयोग करने का कहा है। कंपनी का यह बयान उस समय आया, जब सेबी ने अनुचित व्यापार व्यवहार के कारण जेएम फाइनेंशियल लिमिटेड को ऋण प्रतिभूतियों के किसी भी सार्वजनिक निर्गम के लिए लीड प्रबंधक के रूप में कार्य करने से रोक दिया है। भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड (सेबी) ने अपने अंतरिम आदेश में कहा` कि जेएम फाइनेंशियल उन ऋण प्रतिभूतियों के सार्वजनिक निर्गम में 60 दिन के लिए लीड प्रबंधक के रूप में काम कर सकती है, जो उसके पास मौजूदा समय में हैं। इस आदेश के बाद जेएम फाइनेंशियल ने शेयर बाजार को बताया, कंपनी इस जांच में सेबी के साथ पूरी तरह सहयोग करेगी। भारतीय रिजर्व बैंक ने हाल में जेएम फाइनेंशियल प्रोडक्ट्स लिमिटेड को आरंभिक सार्वजनिक पेशकश के खिलाफ ऋण की मंजूरी और वितरण सहित शेयरों और डिबेंचर के एवज में किसी भी प्रकार का वित्तपोषण प्रदान करने से रोक दिया था। सेबी का आदेश नियामक द्वारा वर्ष 2023 के दौरान गैर-परिवर्तनीय डिबेंचर (एनसीडी) के सार्वजनिक मुद्दों की नियमित जांच के बाद आया है।

आरबीआई ने क्रेडिट और डेबिट कार्ड से जुड़े दिशा-निर्देशों में संशोधन किया

नई दिल्ली ।

भारतीय रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया (आरबीआई) ने क्रेडिट और डेबिट कार्ड से जुड़े दिशा-निर्देशों में संशोधन कर दिया है। रिजर्व बैंक ने कहा है कि डेबिट और क्रेडिट कार्ड जारी करने वाली इकाइयों को बेहतर और असरदार सिस्टम पेश करना है। ऐसा इसलिए किया जा रहा है ताकि फंडों के एंड यूज पर नजर रखी जा सके। रिजर्व बैंक ने बताया कि दिशा-निर्देशों में ये संशोधित प्रावधान तत्काल प्रभाव से लागू हो गए हैं। इसी के साथ आरबीआई ने बताया कि कार्डहोल्डर्स की सुविधा के लिए कार्ड ट्रांजैक्शन संबंधी डेटा सीधे एनक्रिप्टेड फॉर्म में कार्ड जारी करने वाले के सिस्टम से हासिल किया जा सकता है और इसे मजबूत सुरक्षा के साथ को-ब्रांडिंग प्लेटफॉर्म पर दिखाया जा सकता है। इस मामले में रिजर्व बैंक ने कहा है कि सीबीपी के प्लेटफॉर्म के जरिये दिखाई गई जानकारी सिर्फ कार्डहोल्डर को दिखेगी और इसे सीबीपी द्वारा न तो ऐक्सेस और न ही स्टोर किया जा सकता है। संशोधन में भी कहा गया है कि कार्ड जारी करने वाले आउटसोर्सिंग पार्टनर के साथ कार्डहोल्डर का कार्ड डेटा शेयर नहीं करेंगे, जब तक की इस तरह का कोई भी डेटा शेयर करना

आउटसोर्सिंग पार्टनर की जिम्मेदारियों के लिहाज से जरूरी हो। बैंक ने ये भी कहा कि किसी भी तरह का डेटा शेयर करने के मामले में कार्डहोल्डर की सहमति जरूरी होगी। इसके अलावा यह भी सुनिश्चित किया जाएगा कि कार्ड डेटा का स्टोरेज और ओनरशिप कार्ड जारी करने वाले के साथ रहे।

टोयोटा नई इलेक्ट्रिक कार लाने की तैयारी में

नई दिल्ली ।

भारत में टोयोटा कंपनी नई इलेक्ट्रिक कार लाने जा रही है। यह इलेक्ट्रिक कार मारुति सुजुकी की ईवीएक्स की तरह होगी। कंपनी की पहली इलेक्ट्रिक एसयूवी 2025 के फेस्टिव सीजन से पहले लॉन्च की जा सकती है। इससे पहले मारुति सुजुकी की ईवीएक्स भारत में लॉन्च की जाएगी। टोयोटा इलेक्ट्रिक एसयूवी का मुकाबला हुंडई क्रेटा ईवी, टाटा कर्व ईवी और मारुति ईवीएक्स से होगा।टोयोटा ईवी में सी-आकार के एलईडी डीआरएल, आकर्षक फ्रंट बम्पर, फेयर व्हील आर्क मिलेंगे। इसकी लंबाई 4,300 मिमी, चौड़ाई 1,820 मिमी और ऊंचाई 1,620 मिमी होगी। वहीं इसका व्हीलबेस 2,700 मिमी मिलने की उम्मीद है। अपकमिंग टोयोटा ईवी में दो बैटरी विकल्प होने की उम्मीद है, जिसमें एक 60केडब्ल्यू बैटरी पैक, जो लगभग 550 किमी की रेंज देगी है और एक छोटा 48केडब्ल्यू बैटरी पैक, जो 400 किमी की रेंज प्रदान करेगी। कंपनी का कहना है नई ईवी फ्रंट व्हील ड्राइव और ऑल व्हील ड्राइव दोनों तरह के ऑप्शन में आएगी। इस कार में अंदर की तरफ लग्जरी केबिन दिया जाएगा, जिसमें एडवांस टेक्नोलॉजी और सेफ्टी फीचर्स शामिल होंगे। बता दें कि कंपनी द्वारा बीते साल 2023 में मिडसाइज इलेक्ट्रिक एसयूवी दिखाई गई थी।

वॉल स्ट्रीट में एसएंडपी 500 इंडेक्स रिकॉर्ड ऊंचाई पर बंद

मुंबई । पिछले दिन गुरुवार को वॉल स्ट्रीट में जोरदार तेजी देखने को मिली। एसएंडपी 500 इंडेक्स 1 फीसदी बढ़कर रिकॉर्ड ऊंचाई पर पहुंच गया, जबकि नैस्डैक कंपोजिट 1.5 फीसदी की बढ़त पर बंद हुआ। इस साल फेडरल रिजर्व दर में कटौती की संभावनाओं को लेकर निवेशकों उम्मीदें बढ़ने से टेक्नोलॉजी और ग्रोथ स्टॉक्स में सबसे ज्यादा तेजी देखने को मिली। गुरुवार को फिलाडेल्फिया सेमीकंडक्टर इंडेक्स ने ब्रॉडर मार्केट से बेहतर प्रदर्शन किया और 3.36 फीसदी की बढ़त के साथ रिकॉर्ड ऊंचाई पर बंद हुआ। डॉव जोन्स इंडस्ट्रियल एवरेज 130.30 अंक बढ़कर 38,791.35 पर और एसएंडपी 500 52.60 अंक बढ़कर 5,157.36 पर पहुंच गया। वहीं नैस्डैक कंपोजिट इंट्राडे रिकॉर्ड ऊंचाई पर पहुंच गया। कारोबार के अंत में ये 241.83 अंक की बढ़त के साथ 16,273.38 पर बंद हुआ। एसएंडपी 500 इंडेक्स के 11 अहम इंडेक्सों में से 9 में तेजी देखने को मिली। कम्युनिकेशन सर्विसेज और आईटी शेयरों में सबसे ज्यादा तेजी करने की होड़ रही। अंत में टेक्नोलॉजी शेयरों ने बाजी मार ली। ये इंडेक्स 1.89 फीसदी की बढ़त के साथ बंद हुआ। कम्युनिकेशन सर्विसेज में 1.84 फीसदी की बढ़त दर्ज की गई। सोशल मीडिया कंपनी मेटा में 3.2 फीसदी और एआई चिप बनाने वाली एनवीडिया में 4.5 फीसदी तक की तेजी देखने को मिली। वहीं कमजोर सालाना पूर्वानुमान के कारण लॉन्ज्री बनाने वाली रिटेलर विक्टोरिया सीक्रेट एंड कंपनी के शेयरों में तेज गिरावट आई और यह 29.7 फीसदी टूट गया। किराना विक्रेता क्रोगर कंपनी के शेयरों में 9.8 फीसदी की बढ़ोतरी हुई।

महिला दिवस पर घरेलू सिलेंडर 100 रुपए सस्ता हुआ

- सरकार ने अब सालभर में सिलेंडर की संख्या 12 से बढ़ाकर 15 कर दी है

नई दिल्ली ।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शुक्रवार सुबह ट्वीट कर महाशिवरात्रि के अवसर पर देशवासियों को तोहफा दिया है। पीएम मोदी ने अपने एक्स अकाउंट पर पोस्ट करते हुए लिखा कि महिला दिवस के मौके पर सरकार ने घरेलू सिलेंडर में 100 रुपये की छूट देने का फैसला किया है। एक्स पर लिखे पोस्ट में मोदी ने कहा है कि महिला दिवस के अवसर पर आज हमने एलपीजी सिलेंडर की कीमतों में 100 रुपये की छूट का बड़ा फैसला किया है। इससे नारी शक्ति का जीवन आसान होने के साथ ही करोड़ों परिवारों का आर्थिक बोझ भी कम होगा। यह कदम पर्यावरण संरक्षण में भी मददगार बनेगा, जिससे पूरे परिवार का स्वास्थ्य भी बेहतर रहेगा। गौरतलब है कि 1 मार्च को तेल कंपनियों (ओएमसी) ने 19 किलोग्राम वाणिज्यिक एलपीजी गैस सिलेंडर की कीमत में बढ़ोतरी की घोषणा की। बढ़ोतरी के साथ दिल्ली में 19 किलो वाला कमर्शियल एलपीजी गैस सिलेंडर 1,795.00 रुपये में मिल रहा था। कोलकाता में वाणिज्यिक गैस सिलेंडर की संशोधित कीमतें 1,911.00 रुपये, मुंबई में 1,749.00 रुपये और चेन्नई में 1,960.50 रुपये थीं। वहीं सरकार ने साल 2022 में रसोई

गैस सिलेंडर के लिए नया नियम तय किया था। मीडिया रिपोर्टस के अनुसार एक कार्डधारक सालभर में अधिकतम 15 एलपीजी सिलेंडर ही खरीद सकता है। इसमें से 12 सिलेंडर तो सब्सिडी वाले हो सकते हैं, अगर वह पात्र है। 12 से ऊपर जो भी सिलेंडर खरीदेंगे, वह बिना सब्सिडी वाला होगा।

हालांकि, कुल संख्ये या 15 से ऊपर नहीं होनी चाहिए। इसके अलावा हर महीने भी सिर्फ 2 रसोई गैस सिलेंडर खरीदने की अनुमति होगी। इससे पहले तक सिलेंडर खरीदने का कोटा तय नहीं था। हालांकि, पेट्रोलियम कंपनियां साल में सिर्फ 12 रसोई गैस सिलेंडर खरीदने की इजाजत देती थीं। अब इस पर लिमिट तय कर दी गई है और सालभर में कुल सिलेंडर की संख्ये या को 15 तय कर दिया गया है। पेट्रोलियम कंपनियों का कहना है कि कोई व्यक्ति बिना सब्सिडी वाला सिलेंडर 15 की तय लिमिट से भी ज्यादा खरीद सकता है, लेकिन इसके लिए उसे कारण बताना होगा। मान लीजिए किसी के घर में शादी या कोई कार्यक्रम है तो वह इससे जुड़े पेपर अथवा कोई सबूत पेश करके जरूरत के हिसाब से सिलेंडर ले सकता है।

सरकार ने इंडिया एआई को बढ़ावा देने 10,000 करोड़ की मंजूरी दी

नई दिल्ली ।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सरकार ने भारत में एआई बनाने और भारत के लिए एआई को कारगर बनाने के दृष्टिकोण को आगे बढ़ाते हुए व्यापक राष्ट्रीय स्तर के इंडियाएआई मिशन को 10,371.92 करोड़ रुपये के बजट परिव्यय के साथ मंजूरी दे दी। इंडियाएआई मिशन सार्वजनिक और निजी क्षेत्रों में रणनीतिक कार्यक्रमों और साझेदारी के माध्यम से एआई नवाचार को उत्प्रेरित करने वाला एक व्यापक पारिस्थितिकी तंत्र स्थापित करेगा। कंप्यूटिंग पहुंच का लोकतंत्रीकरण करके, डेटा गुणवत्ता में सुधार करके, स्वदेशी एआई क्षमताओं को विकसित करके, शीर्ष एआई प्रतिभा को आकर्षित करके, उद्योग सहयोग को सक्षम करके, स्टार्टअप जोखिम पूंजी प्रदान करके, सामाजिक रूप से प्रभावशाली एआई परियोजनाओं को सुनिश्चित करके और नैतिक एआई को मजबूत करके, यह भारत के एआई पारिस्थितिकी तंत्र के जिम्मेदार, समावेशी विकास को बढ़ावा देगा। मिशन को डिजिटल इंडिया कॉर्पोरेशन (डीआईसी) के तहत इंडियाएआई इंडिपेंडेंट बिजनेस डिवीजन (आईबीडी) द्वारा कार्य रूप दिया जाएगा। एक अधिकारी ने कहा कि स्वीकृत इंडियाएआई मिशन देश की तकनीकी संप्रभुता सुनिश्चित

करने के लिए नवाचार को बढ़ावा देगा और घरेलू क्षमताओं का निर्माण करेगा। यह देश के जनसांख्यिकीय लाभांश का दोहन करने के लिए अत्यधिक कुशल रोजगार के अवसर भी पैदा करेगा।

टाटा ग्रुप के चार शेयरों में सबसे ज्यादा तेजी रही

मुंबई । टाटा समूह की कई कंपनियों के शेयर में बीते दिन तेजी देखी गई। बाजार में टाटा समूह की 18 लिस्टेड स्टॉक्स में से 17 में तेजी देखी गई। टाटा ग्रुप के 4 शेयरों में सबसे ज्यादा तेजी रही। ये स्टॉक्स थे टाटा केमिकल्स, टाटा पावर, टाटा मोटर्स और इंडियन होटल्स हैं, इनमें जबरदस्त उछाल देखने को मिला। बता दें कि बाजार में टाटा ग्रुप को लेकर एक खास खबर के बाद शेयरों में उछाल देखा गया। मीडिया रिपोर्ट्स में कहा गया है कि जल्द टाटा ग्रुप की टाटा संस भी घरेलू शेयर बाजार में लिस्ट हो सकती है। बाजाविके जानकारों का कहना है कि इसी खबर के बाद से ही टाटा ग्रुप शेयरों में तेजी देखी गई है। जल्द ही टाटा ग्रुप की टाआ संस् अपना आईपीओ ला सकती है। देश में कई कंपनियां अपनी बढ़ती वैल्यूएशन का फायदा उठाते हुए शेयर बेचने की योजना बना रही हैं। 2024 की शुरुआत से अब तक भारत में आईपीओ की संख्या दोगुनी से भी अधिक होकर 56 हो गई है। टाटा संस के लिस्टेड निवेश का बाजार मूल्य 16 ट्रिलियन रुपये होने का अनुमान है। इसकी निजी हिस्सेदारी का मूल्य 1-2 ट्रिलियन रुपये होने का अनुमान है। निवेशकों को होल्डिंग कंपनी के लिए 30-60 प्रतिशत की छूट का लाभ मिल सकता है। टाटा संस का 96 अरब डॉलर का मूल्यांकन इसे भारत का सबसे मूल्यवान ग्रुप बना देगा।

देश के बिजली उद्योग में 17 लाख करोड़ का निवेश आने की उम्मीद: आरके सिंह

नई दिल्ली ।

देश में बिजली की खपत और मांग तेजी से ऊर्जा सेक्टर में निवेश भी बढ़ता जा रहा है। केंद्रीय मंत्री आरके सिंह ने कहा है कि घरेलू बिजली उद्योग में अगले 5-7 वर्षों में 17 लाख करोड़ रुपये का निवेश आने की उम्मीद है। बिजली मंत्रालय ने एक बयान में बिजली, नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्री के हवाले से कहा गया है कि इस क्षेत्र में पिछले नौ साल में 20 लाख करोड़ रुपये का निवेश हुआ है। सिंह ने यहां एक कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा` कि मेरे कार्यकाल के दौरान, हमने लगभग 3,000 नए सबस्टेशन बनाने, लगभग 4,000 सबस्टेशनों को उन्न करने, 8.5 लाख सर्किट किलोमीटर एचटी (हाई टेंशन) और एलटी (लो टेंशन) लाइनें और 7.5 लाख ट्रांसफार्मर जोड़ने में लगभग दो लाख करोड़ रुपये खर्च किए गए हैं। उन्होंने कहा कि देश ने 190 गीगावाट बिजली उत्पादन क्षमता जोड़ी, जो इस अवधि के दौरान बढ़कर लगभग 436 गीगावाट हो गई। भारत ने पारेषण लाइनों में 2,00,000 सर्किट किलोमीटर जोड़े और हमारी पारेषण प्रणाली दुनिया में सबसे बड़ी एकीकृत पारेषण प्रणाली है। यह देश के एक कोने से दूसरे कोने में 116 गीगावाट बिजली का हस्तांतरण कर सकती है। सिंह ने कहा` कि हम 4,000 मेगावाट भंडारण क्षमता

के लिए बोलियां लाने जा रहे हैं और हमारी विभिन्न चरणों में 50 गीगावाट की पंप भंडारण परियोजनाएं भी शुरू हो चुकी हैं। मंत्री ने यह भी कहा कि भारत में नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता बढ़ाने की गति दुनिया में सबसे ज्यादा है। देश की गैर-जीवाश्म क्षमता लगभग 186 गीगावाट है, जिसमें से सात गीगावॉट परमाणु है और शेष सौर, पवन और जलविद्युत है। उन्होंने कहा कि मॉड्यूल निर्माण क्षमता 20 गीगावाट से बढ़कर 50 गीगावाट और सेल विनिर्माण क्षमता दो गीगावाट से बढ़कर लगभग 12-13 गीगावाट हो गई है।

कबाड़ बेचकर रेलवे ने कमाए 514 करोड़

- सालाना बिक्री का लक्ष्य 500 करोड़ रुपए ही था

नई दिल्ली ।

हर साल भारतीय रेलवे साल भर में कबाड़ बेचकर करोड़ों रुपए कमाता है। वैसे तो भारतीय रेलवे टिकट और माल ढुलाई से कमाई करता है. हालांकि कमाई का मुख्ये स्रोत माल ढुलाई ही है। हाल ही में उत्तर रेलवे ने कबाड़ बेचकर करोड़ों की कमाई कर डाली है, जो तय किए गए लक्ष्य से अधिक है। रेलवे के विशेषज्ञ बताते हैं कि उत्तर रेलवे ने कबाड़ बेचकर जितनी कमाई की है उससे करीब पांच वंदेभारत एक्ये सप्रेस ट्रेन बनाई जा सकती हैं। एक वंदेभारत एक्ये सप्रेस ट्रेन की लागत करीब 1.07 करोड़ रुपये आती है। रेलवे के विशेषज्ञ बताते हैं कि उत्तर रेलवे ने कबाड़ बेचकर जितनी कमाई की है उससे करीब पांच वंदेभारत एक्ये सप्रेस ट्रेन बनाई जा सकती हैं। एक वंदेभारत एक्सप्रेस ट्रेन की लागत करीब 1.07 करोड़ रुपये आती है। उत्तर रेलवे के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि जाने ने स्क्रैप बिक्री में एक नया रिकॉर्ड बनाया है। वित्तीय वर्ष 2023-24 में 514.06 करोड़ रुपये कबाड़ से कमाए हैं। सालाना बिक्री का लक्ष्य 500 करोड़ रुपये ही था। इस प्रकार उत्तर रेलवे कबाड़ बेचकर की गई कमाई में पहले स्थान पर है। रेलवे के अनुसार स्क्रैप से राजस्व अर्जित किये जाने के साथ-साथ स्टेशन परिसरों को साफ-सुथरा बनाए रखने में भी मदद मिलती है। कबाड़ में रेल पटरियों के टुकड़े, स्लीपर, टाई बार को इकट्ठा कर बेचा जाता है। इसके अलावा स्टाफ क्वाटरों, केबिनों, शैडो, वाटर टैंकों से निकला कबाड़ भी शामिल हैं। उत्तर रेलवे पर बड़ी संख्ये या में एकत्रित हो गए स्क्रैप पीएसी स्लीपरों का निपटान भी किया जा रहा है, ताकि राजस्व अर्जित करने के साथ साथ बहुमूल्य भूमि को रेल गतिविधियों के लिए खाली रखा जा सके।

टाटा, सीजी पावर को सेमीकंडक्टर प्लांट के लिए गुजरात में मिली जमीन

- टाटा समूह 91,000 करोड़ निवेश से देश का पहला मेगा फैब कारखाना लगाएगा

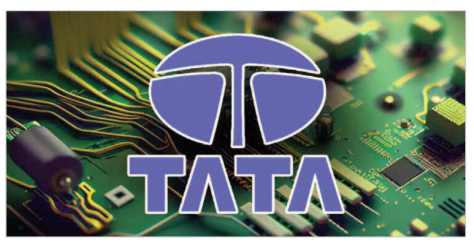

नई दिल्ली ।

टाटा समूह को गुजरात के धोलेरा में 160 एकड़ जमीन मिल गई है, जहां वह 91,000 करोड़ रुपये के निवेश से देश का पहला मेगा फैब कारखाना लगाएगा। सीजी पावर को भी एटीएमपी (सेमीकंडक्टर की असेंबलिंग, टेस्टिंग, मार्केटिंग और पैकेजिंग) इकाई लगाने के लिए साणंद में 28 एकड़ जमीन आवंटित की गई है। गुजरात सरकार के अधिकारियों का कहना है कि सीजी पावर इस कारखाने पर 7,600 करोड़ रुपये का निवेश करेगी। दोनों परियोजनाओं का शिलान्यास वरिष्ठ राजनेताओं और सरकारी अधिकारियों की उपस्थिति में 13 मार्च को किया जा सकता है।

इन परियोजनाओं को कुछ दिन पहले ही मंत्रिमंडल से मंजूरी मिली थी। बताया जा रहा है कि टाटा और उसकी तकनीकी साझेदार ताइवान की पीएसएमसी की टीम ने परियोजना स्थल का मुआयना किया है और फैब संयंत्र के आवश्यक पानी, बिजली, अपशिष्ट शोधन क्षमता आदि के लिए धोलेरा विशेष निवेश क्षेत्र प्राधिकरण से चर्चा की जा रही है। सूत्रों ने बताया कि टाटा को जमीन की 25 फीसदी कीमत पेशगी देनी होगी और बाकी कीमत गुजरात सरकार बतौर सब्सिडी धोलेरा विशेष निवेश क्षेत्र विशेष उद्देश्यीय इकाई को चुकाएगी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 2013 में जब गुजरात के मुख्यमंत्री थे तब उन्होंने धोलेरा के विकास की महत्त्चाकांक्षी योजना की नींव रखी थी। यह अहमदाबाद से 110 किलोमीटर की दूरी पर है। परियोजना का पहला चरण 22.5 वर्ग किलोमीटर में फैला है और पूरा होने के बाद यह सिंगापुर शहर से भी बड़ा होगा।

एफएमसीजी क्षेत्र की ग्रोथ सितंबर तिमाही तक रह सकती है सुस्त

नई दिल्ली ।

रोजमर्रा के उपभोग वाले उत्पाद (एफएमसीजी) क्षेत्र में अनिश्चित कारोबारी परिदृश्य की वजह से इस साल सितंबर तिमाही तक धीमी रफ्तार से वृद्धि होने का अनुमान है। एक डेटा एवं सलाहकार फर्म की एक रिपोर्ट के मुताबिक कृषि क्षेत्र में अनिश्चितता बनी रहने से मांग पर असर पड़ सकता है। इसके अलावा आगामी आम चुनावों से भी एफएमसीजी उत्पादों की खपत बढ़ने की संभावना नहीं दिख रही है। हालांकि, फर्म ने उम्मीद जताई है कि सितंबर तिमाही के बाद एफएमसीजी क्षेत्र की वृद्धि उत्तरोत्तर बेहतर होगी। दूसरी छमाही में रबी की अच्छी फसल होने पर यह साल भी अच्छा साबित हो सकता है। रिपोर्ट कहती है कि गर्मियों से संबंधित कुछ श्रेणियों और कपड़े धोने के उत्पाद भी उद्योग को कुछ हद तक समर्थन देंगे। हालांकि, इन श्रेणियों में संयुक्त वृद्धि का समग्र एफएमसीजी पर प्रभाव नगण्य ही रहेगा। ऐसी स्थिति में साल 2024 की तीसरी तिमाही तक

एफएमसीजी की वृद्धि कम होने का अनुमान है। पिछले साल की पहली छमाही के मजबूत प्रदर्शन की वजह से इस साल की पहली छमाही में एफएमसीजी की वृद्धि स्थिर भी रह सकती है। हालांकि, उसके बाद हालात धीरे-धीरे बेहतर होते जाएंगे। जहां तक 2024 के चुनावी साल होने से मांग बढ़ने की संभावना का सवाल है तो इस रिपोर्ट में इससे इनकार किया गया है।

क्रॉली का विकेट मिलने पर हुई सबसे ज्यादा खुशी : कुलदीप

धर्मशाला । भारतीय टीम के चाइनमैन स्पिनर कुलदीप यादव ने इंग्लैंड के खिलाफ पहली पारी में शानदार गेंदबाजी करते हुए मेहमान टीम को समेटने में अहम भूमिका निभाई थी। वहीं अब कुलदीप का कहना है कि उन्हें सबसे ज्यादा खुशी जैक क्रॉली का विकेट लेने पर मिली। कुलदीप ने इस मैच की पहली पारी में पांच विकेट लिए थे। उन्होंने जैक क्रॉली, बेन डकेट, ओली पोप, जॉनी बेयरस्टो और बेन स्टोक्स को आउट किया। ओली के आउट होने को लेकर कुलदीप ने कहा कि वह जल्दी खेलने के प्रयास में अपना विकेट गंवा बैठे। वहीं कुलदीप से जब उनके प्रदर्शन को लेकर पूछा गया तो इस स्पिनर ने कहा कि मैं अपने खेल का आनंद उठा रहा हूं। साथ ही कहा कि साल 2021 में हुई सर्जरी के बाद मैंने बहुत मेहनत की है। उसी का फल अब मुझे मिला है। साथ ही कहा कि मैंने अपनी गति पर काम किया, जब आप भारत में टेस्ट मैच खेलते हैं तो यह बहुत अहम होता है। मैं बस अपनी गेंदबाजी का आनंद लेता रहा। मुझे जैक क्रॉली को आउट कर अच्छा लगा क्योंकि इस बल्लेबाज ने पूरी सीरीज में अच्छा प्रदर्शन किया था। साथ ही कहा कि वह स्पिन के अच्छे खिलाड़ी हैं। विकेट के बारे में नहीं सोचना अहम होता है। साथ ही कहा कि मैं ऐसा व्यक्ति हूं जो अपने कौशल पर भरोसा करता हूं।

रोहित-गिल के शतक, भारत 255 रन की बढ़त के साथ ड्राइवर सीट पर

धर्मशाला,

कप्तान रोहित शर्मा (103) और शुभमन गिल (110) के शानदार शतकों तथा उनके बीच दूसरे विकेट के लिए 171 रन की जबरदस्त साझेदारी की बदौलत भारत ने पांचवें और अंतिम टेस्ट मैच में दूसरे दिन शुक्रवार को आठ विकेट पर 473 रन बनाकर इंग्लैंड पर अपना शिकंजा कस दिया। भारत के पास अब 255 रन की भारी बढ़त हो गयी है। रोहित और गिल के शतकों के अलावा डेब्यूटेंट देवदत्त पडिक्कल (65) तथा सरफराज खान (56) ने अर्धशतक बनाये और चौथे विकेट के लिए 97 रन की साझेदारी कर भारत को मजबूत स्थिति में पहुंचाया। स्टंप्स के समय कुलदीप यादव 27 और जसप्रीत बुमराह 19 रन बनाकर क्रीज पर है। दोनों के बीच नौंवें विकेट के लिए 45 रन की अटूट साझेदारी हो गयी है।

भारत ने कल के एक विकेट पर 135 रन से आगे खेलना शुरू किया। दिन भर के खेल में इंग्लैंड ने सात विकेट निकाले, लेकिन शुरुआती पांच बल्लेबाजों की शानदार पारियों की वजह से भारत इस मैच में बहुत आगे निकल गया है। तीसरे सेशन में इंग्लैंड को पांच विकेट मिले लेकिन उन्होंने 97 रन भी दिए। इंग्लैंड अपनी पहली पारी में 218 रन बनाकर ऑलआउट हो गया था। शुक्रवार को भारत ने 135/1 से अपनी पारी आगे बढ़ाई। फिलहाल दूसरे दिन लंच तक भारत ने एक विकेट के नुकसान पर 264 रन बना लिए थे । रोहित शर्मा और शुभमन गिल दोनों खिलाड़ी शतक लगा चुके थे। दोनों खिलाड़ी लंच के बाद आउट हुए। रोहित शर्मा 162 गेंदों में 3 छक्के और 13 चौके लगाकर 103 रन बनाकर आउट हुए। वहीं गिल 150 गेंदों का सामना करते हुए 5 छक्के और 12 चौके लगाकर 110 रन बनाकर आउट हुए। एक चुनौतीपूर्ण सुबह के बाद इंग्लैंड ने आखिरकार सफलता हासिल की और वह कप्तान बेन स्टोक्स थे, जिन्होंने रोहित को बोल्ड कर अपनी टीम को सफलता दिलाई। घुटने की लगातार समस्या के कारण जून में लॉर्ड्स टेस्ट के बाद से स्टोक्स ने गेंदबाजी करने से परहेज किया था। इस दौरान पिछले साल उनकी सर्जरी भी हुई। रोहित का विकेट 275 के स्कोर पर गिरा। उनके आउट होने के चार रन बाद गिल को जेम्स एंडरसन ने आउट कर दिया। लेकिन इसके बाद देवदत्त पडिक्कल (77 गेंदों पर नाबाद 44) और सरफराज (59 गेंदों पर नाबाद 56) ने चायकाल तक चौथे विकेट के लिए 131 गेंदों पर 97 रनों की साझेदारी की। स्पिनर शोएब बशीर ने चायकाल के बाद सरफराज और पडिक्कल को पवेलियन का रास्ता दिखाया। सरफराज ने 60 गेंदों में आठ चौके और एक छक्का लगाया जबकि पडिक्कल ने 103 गेंदों पर 10 चौके और एक छक्का लगाया।

ऑस्ट्रेलिया ने दूसरे टेस्ट में न्यूजीलैंड पर शिकंजा कसा

क्राइस्टचर्च ।

ऑस्ट्रेलिया ने यहां मेजबान न्यूजीलैंड के साथ जारी दूसरे टेस्ट मैच में शिकंजा कस दिया है। इस मैच में ऑस्ट्रेलियाई टीम ने जोश हेजलवुड के पांच विकेटों की की सहायता से न्यूजीलैंड को पहली पारी में 162 रनों पर ही समेट दिया था। इसके बाद पहले दिन का खेल समाप्त होने के समय तक ऑस्ट्रेलियाई टीम ने अपनी पहली पारी में 4 विकेट खोकर 124 रन बना लिए थे। इस प्रकार अब वह पहली पारी के आधार पर 38 रन ही पीछे है जबकि उसके पास अभी छह विकेट हैं। दिन का खेल समाप्त होने के समय लबुछेन 45 जबकि नाथन लियोन 1 रन बनाकर खेल रहे थे। वहीं मेजबान टीम की ओर से

मैट हैनरी ने 39 रन देकर 3 विकेट लिए।

ऑस्ट्रेलियाई टीम दो टेस्ट मैचों की इस सीरीज में अभी 1-0 से आगे है और ऐसे में उनका लक्ष्य 2-0 से सीरीज जीतना रहेगा। इस मैच में न्यूजीलैंड की ओर से टॉम लैथम और विल यंग ने अच्छी शुरूआत की। लैथम ने 69 गेंदों पर 38 रन जबकि विल यंग ने 14 रन बनाये थे पर इस जोड़ी के टूटते ही टीम लड़खड़ा गयी। अनुभवी बल्लेबा केन विलियमसन 17, रचिन रवींद्र 4 तो डेरिल मिशेल 4 रन बनाकर पेवेलियन लौट गये। जिससे टीम मुश्किल स्थिति में फंस गयी। टॉम ब्लंडल ने हालांकि 22 रन बनाकर कुछ संघर्ष किया। वहीं ग्लेन फिलिप्स 2 जबकि कुग्गेलिन खाता खोले बिना ही पेवेलियन लौट गये। मैट हैनरी ने 29 जबकि कप्तान टिम साऊदी ने 26 रन बनाकर स्कोर 162 तक पहुंचाया। वहीं ऑस्ट्रेलिया की ओर से हेजलवुड ने 31 रन देकर 5 विकेट लिए जबकि माइकल स्टार्क ने 59 रन देकर 3 खिलाड़ियों को आउट किया। पैट कमिंस और कैमरून ग्रीन को एक-एक विकेट मिला। इस मैच में ऑस्ट्रेलिया की शुरूआत अच्छी नहीं रही। सलामी बल्लबाज स्टीव स्मिथ 11 और उस्मान ख्वाजा 16 रन बनाकर पेवेलियन लौट गये। इसके बाद मार्नेस लाबुछेन ने एक छोर संभाला पर कैमरून ग्रीन 25 और ट्रेविस हेड 21 रन बनाकर पेवेलियन लौट गये।

रुतुराज, कॉनवे जैसे खिलाड़ियों का सीएसके को लाभ मिलेगा : गावस्कर

मुम्बई । भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान सुनील गावस्कर ने कहा है कि 22 मार्च से शुरु हो रहे आईपीएल में चेन्नई सुपर किंग्स (सीएसके) को रुतुराज गायकवाड़ और डेवोन कॉनवे जैसी शानदार सलामी जोड़ी से लाभ मिलेगा। आईपीएल में रुतुराज और कॉनवे का शानदार काफी अच्छा रहा है। न्यूजीलैंड के कॉनवेने 16 मैचों में 139.70 की स्ट्राइक रेट से 672 रन बनाए हैं, वहीं रुतुराज ने 147.50 की स्ट्राइक रेट से 590 रन बनाए हैं। सीएसके की बल्लेबाजी की ताकत को लेकर गावस्कर ने कहा कि उसके पास हमेशा से ही बेहतरीन बल्लेबाज रहे हैं। उसके ये बल्लेबाज पहली ही गेंद से विरोधी टीम पर दबाव बनाने लगते हैं जिसका लाभ सीएसके को मिलता है। इसके अलावा उसके पास अच्छ फिनिशर भी हैं। गावस्कर ने कहा कि मुझे लगता है कि रुतुराज गायकवाड़ और डेवोन कॉनवे का बाएं और दाएं हाथ का संयोजन भी टीम के लिए फायदेमंद रहा है। टीम के पास लीग में सबसे बेहतर सलामी जोड़ी है। इसी कारण टीम को हमेशा अच्छी शुरुआत मिलती रही है। इससे आने वाले खिलाड़ियों पर दबाव घटता रहा है। रुतुराज और कॉनवे ने कई अहम साझेदारियां की जिसका भी लाभ उसे मिला है। दिल्ली कैपिटल्स के सबसे मजबूत गेंदबाजी आक्रमण के खिलाफ उन्होंने 141 रन की साझेदारी की। गावस्कर ने साथ ही कहा कि सीएसके की बल्लेबाजी में गहराई होने के अलावा वह लक्ष्य का पीछा करने में भी माहिर है।

उर्वशी जोशी ब्रिस्टल ओपन स्क्वैश के क्वार्टर फाइनल में

ब्रिस्टल,

भारत की उर्वशी जोशी दूसरी वरीयता प्राप्त ऑस्ट्रेलियाई सोफी फैडली पर 3-2 की उलटफेर भरी जीत के साथ ब्रिस्टन ओपन स्क्वैश के महिला क्वार्टर फाइनल में पहुंच गई हैं।

2023 राष्ट्रीय चैंपियनशिप की सेमीफाइनलिस्ट उर्वशी ने 3000 अमेरिकी डॉलर के चल रहे पीएसए चैलेंजर टूर्नामेंट के 35 मिनट के दूसरे दौर के कड़े मुकाबले में दो बार पिछड़ने के बाद 7-11, 11-6, 9-11, 11-5, 11-7 से जीत हासिल की। ।

महाराष्ट्र की खिलाड़ी, जिन्होंने पहले दौर में इंग्लैंड की जैस्मीन कलार को 21 मिनट में 11-4, 11-5, 9-11, 11-9 से हराया, क्वार्टर फाइनल में ऑस्ट्रेलिया की पांचवीं वरीयता प्राप्त एरिन क्लासेन से भिड़ेंगी।

क्लासेन ने दूसरे दौर में इंग्लैंड की ओलिविया बेसेंट को 25 मिनट तक चले मुकाबले में 3-0 (11-5, 11-5, 14-12) से हरा दिया। दूसरे क्वार्टरफाइनल में माल्टा की चौथी वरीयता प्राप्त कोलेट सुल्ताना का मुकाबला आयरलैंड की गैरवरीयता प्राप्त ब्रिएन फ्लिन से होगा।

इस टूर्नामेंट में प्रवेश करने वाले अन्य भारतीयों में, तनिष्का जैन 32 मिनट में ब्रिएन फ्लिन से 11-4, 11-7, 9-11, 11-7 से हार गई।

संक्षिप्त समाचार

सचिन ने महिला दिवस पर पहली महिला पिच क्यूरेटर की तस्वीर साझा की

नई दिल्ली । महान बल्लेबाज सचिन तेंदुलकर ने महिला दिवस पर देश की पहली महिला पिच क्यूरेटर जैसिंथा कल्याण की कहानी सोशल मीडिया पर पोस्ट की है। सचिन ने सोशल मीडिया पर इस तस्वीर को साझा करते हुए कहा है कि ये महिला सशिक्तकरण के बढ़ते हुए कदमों को दिखाता है। सचिन ने इस दौरान साल 2008 की वह तस्वीर भी साझा की है। इसमें जैसिंथा सहयोगी स्टाफ के साथ उनसे हाथ मिलाने पिच पर पहुंचीं थीं। सचिन ने अपनी पोस्ट में महिला सशिक्तकरण की मजबूती की प्रशंसा की है। सचिन ने सोशल मीडिया पर लिखा, पिछले कुछ साल में भारत और दुनिया भर में खेल में महिलाओं की वृद्धि बहुत उत्साहजनक रही है। साथ ही कहा कि साल 2008 में जब भारत ने इंग्लैंड के खिलाफ मैच जीता तो यह पूरे देश के लिए एक भावनात्मक क्षण था। यह उन पहले लोगों में से एक थी जिनके साथ मैं इस भावना को साझा करने में सक्षम रहा। साल 2024 में जैसिंथा कल्याण भारत की पहली महिला पिच क्यूरेटर बनीं। उम्मीद है कि भविष्य में और भी महिलाएं इस क्षेत्र में आने वाली हैं। इस अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर, आइए हम इन रोल मॉडलों को प्रोत्साहित करें और उनकी सराहना करें जो सभी क्षेत्रों में बाधाओं को तोड़े और उदाहरण स्थापित करना जारी रखें।

आईपीएल के लिए चेपॉक स्टेडियम में अभ्यास करते नजर आये धोनी

चेन्नई । चेन्नई सुपर किंग्स (सीएसके) टीम के कप्तान महेन्द्र सिंह धोनी ने 22 मार्च से शुरु हो रहे इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) के लिए अपनी तैयारियां शुरु कर दी हैं। धोनी का एक वीडियो सामने आया है। इसमें वह चेपॉक स्टेडियम में अभ्यास करते दिख रहे हैं। वहीं सीएसके टीम ने एक वीडियो भी साझा किया है। इसमें आईपीएल को लेकर लोगों में उत्साह साफ देखा जा रहा है। इसमें दिखाया गया है कि छोटे बच्चों से लेकर अनुभवी क्रिकेट प्रेमी भी उत्साहित होकर सड़कों पर नजर आ रहे हैं। ये सभी अपने पसंदीदा खिलाड़ियों की एक झलक पाने का प्रयास करते दिखे हैं। ।सीएसके टीम की बस जैसे ही चेपॉक स्टेडियम पहुंची तो दर्शकों ने उत्साहित होकर नारे लगाने शुरु कर दिये। सीएसके के सोशल मीडिया ने भी अपने प्रशंसकों को धोनी के लंबे बालों वाली एक झलक दिखाई। साथ ही लिखा कि माही आ गए हैं। धोनी जामनगर में अनंत अंबानी और राधिका मर्चेंट के प्री-वेडिंग समारोह में भाग लेने के बाद यहां पहुंचे हैं। उनके अलावा रुतुराज गायकवाड़ और दीपक चाहर जैसे खिलाड़ी भी मैदान में नजर आये। धोनी ने जोश के साथ नेट्स पर अभ्यास किया। माना जा रहा है कि ये धोनी का अंतिम आईपीएल होगा। उस कारण भी दर्शक उनकी एक झलक पाने को उत्साहित दिखे।

यशस्वी ने छक्के मारने के मामले में गावस्कर, युवराज सहित दिग्गजों को पीछे छोड़ा

धर्मशाला ।

भारतीय क्रिकेट टीम के युवा सलामी बल्लेबाज यशस्वी जायसवाल ने पदार्पण के बाद से ही जबरदस्त प्रदर्शन कर एक के बाद एक उपलब्धियां हासिल की हैं। यशस्वी ने मात्र 9 टेस्ट में ही अपने 1000 रन पूरे करने के बाद अब छक्के मारने के मामले में भी रिकार्ड बनाया है। यशस्वी ने अपने 9 टेस्ट मैचों में 29 छक्के लगाये हैं जबकि विराट कोहली, मोहम्मद अजहरुद्दीन और युवराज सिंह ने अपने पूरे करियर में भी इतने छक्के नहीं लगाये थे। यशस्वी ने यहां पहले टेस्ट मैच की अपनी पहली पारी में ही तीन छक्के लगाकर सभी दिग्गजों को पीछे छोड़ दिया। विराट कोहली, सुनील गावस्कर, मोहम्मद अजहरुद्दीन, युवराज सिंह, राहुल द्रविड, वीवीएस लक्ष्मण, रवि शास्त्री, गौतम गंभीर, केएल राहुल, शिखर धवन जैसे दिग्गज अपने पूरे टेस्ट करियर में भी उतने छक्के नहीं लगा पाए हैं, जितने यशस्वी ने लगाए हैं। विराट कोहली और सुनील गावस्कर ने अपने टेस्ट करियर में 26-26 छक्के लगाए हैं। वहीं केएल राहुल ने 24, युवराज ने 22, रवि शास्त्री ने 22, द्रविड़ ने 21 और अहहरुद्दीन ने 19 छक्के लगाए हैं। शिखर धवन ने 12, गौतम गंभीर ने 10 छक्के लगाए हैं। वहीं वीवीएव लक्ष्मण ने अपने पूरे टेस्ट करियर में 5 छक्के लगाए। जहां तक सबसे अधिक छक्के लगाने की बात है तो यह रिकॉर्ड इंग्लैंड के मौजूदा कप्तान बेन स्टोक्स के नाम है।

उन्होंने अब तक 128 छक्के लगाए हैं। भारत के वीरेंद्र सहवाग सबसे अधिक छक्के लगाने वाले बल्लेबाजों की सूची में छठे नंबर पर हैं। उन्होंने 104 टेस्ट में 91 छक्के लगाए हैं।

ब्रंट के ऑलराउंड प्रदर्शन से मुम्बई इंडियंस ने डब्ल्यूपीएल में यूपी वारियर्स को हराया

बेंगलुरु। नैट-स्काइवर ब्रंट के ऑलराउंड प्रदर्शन की बदौलत मुम्बई इंडियंस की टीम ने यहां महिला प्रीमियर लीग क्रिकेट (डब्ल्यूपीएल) के दूसरे सत्र में यूपी वारियर्स को 42 रनों से हरा दिया। इस मैच में पहले बल्लेबाजी करते हुए मुंबई इंडियंस ने 6 विकेट पर 160 रन बनाये। इसके बाद लक्ष्य का पीछा करते हुए यूपी वारियर्स की टीम 9 विकेट पर 118 रन ही बना पायी। ब्रंट ने सबसे अधिक 45 रन बनाने के बाद दो विकेट भी लिए। इस मैच में पहले बल्लेबाजी करते हुए मुम्बई की शुरुआत अच्छी नहीं रही। सलामी बल्लेबाज हेले मैथ्यूज और यास्तिका भाटिया शुरुआत में ही पेवेलियन लौट गयीं पर इसके बाद ब्रंट और हरमनप्रीत कौर ने अच्छी साझेदारी कर पारी को आगे बढ़ाया। पावरप्ले में टीम ने 2 विकेट पर 37 रन बनाये। इसके बाद ब्रंट और हरमनप्रीत ने तीसरे विकेट के लिए 59 रन बनाये। इनके आउट होने के बाद अमेलिया केर 39 और एस. सजना ने अच्छी बल्लेबाजी कर टीम को आगे बढ़ाया। मुंबई इंडियंस ने अंतिम चार ओवरों में 38 रन बनाए। टीम ने 20 ओवर में 6 विकेट पर 160 रन बनाये। इसे बाद लक्ष्य का पीछा करते हुए वॉरियर्स की टीम की ओर से केवल दीप्ति शर्मा 53 ही रन बना पायी जबकि अन्य खिलाड़ी असफल रही। वॉरियर्स की टीम यूपी सैका इशाक और शबनीम इस्माइल की गेंदबाजी के सामने टिक नहीं पायी। इशाक ने तीन विकेट लिए।

अंपायर केटलब्रॉ ने शुभमन की तुलना सचिन से की

धर्मशाला । अंपायर रिचर्ड केटलब्रॉ ने भारतीय टीम के युवा बल्लेबाज शुभमन गिल की जमकर प्रशंसा की है। शुभमन ने यहां इंग्लैंड के खिलाफ पांचवें और अंतिम क्रिकेट टेस्ट मैच में जिस प्रकार शतक लगाकर भारतीय टीम को बेहतर स्थिति में पहुंचाया उससे केटलब्रॉ भी प्रभावित हैं। केटलब्रॉ ने शुभमन की तुलना महान बल्लेबाज सचिन तेंदुलकर से की है। केटलब्रॉ ने शुभमन के शतक बनाने का एक वीडियो भी साझा किया है। आईसीसी आयोजनों में केटलबोरो ऐसे ऐसे अंपायर रहें है जिनके रहते भारतीय टीम को अहम मुकाबलों में हार का सामना करना पड़ा है। इसमें पिछले साल हुए एकदिवसीय विश्वकप का फाइनल भी था। इसके अलावा साल 2014 टी20 विश्व कप का फाइनल भी शामिल था, जिसमें भारतीय टीम श्रीलंका से हार गयी थी। इसके अलावा 2015 एकदिवसीय विश्व कप का सेमीफाइनल जिसमें ऑस्ट्रेलिया जीता था और 2016 टी20 विश्व कप का सेमीफाइनल जिसमें भारत वेस्टइंडीज से हार गया था। यहीं नहीं 2017 में चैंपियंस ट्रॉफी के दौरान भी जब भारत पाकिस्तान से हारा तब भी वही अंपायर थे। 2019 वनडे विश्व कप के सेमीफाइनल में भी रिचर्ड अंपायर थे जब भारत को न्यूजीलैंड से हार झेलनी पड़ी थी।

पाक क्रिकेट टीम के मुख्य कोच बन सकते हैं वाटसन

लाहौर ।

ऑस्ट्रेलिया के पूर्व क्रिकेटर शेन वॉटसन पाकिस्तान क्रिकेट टीम के नये मुख्य कोच बन सकते हैं। वॉटसन अभी फिलहाल पाकिस्तान सुपर लीग (पीएसएल) में क्वेटा ग्लेडिएटर्स के मुख्य कोच हैं। उनके कोच बनने के बाद ग्लेडिएटर्स का प्रदर्शन बेहतर हुआ है। एक रिपोर्ट के अनुसार पाक क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) राष्ट्रीय टीम के लिए मुख्य कोच की तलाश में है और इसके लिए वाटसन दौड़ में सबसे आगे हैं। माना जा रहा है कि वॉटसन इस मामले में पीसीबी चेयरमैन मोहसिन खान से भी मिल सकते हैं। वॉटसन का एक ही कमजोर पक्ष ये है कि वह अब तक किसी देश की टीम के कोच नहीं रहे हैं। अगर वह कोच बनने तो पहली बार अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ये जिम्मेदारी निभाएंगे। वॉटसन ने ऑस्ट्रेलिया की ओर से अबतक 59 टेस्ट, 190 एकदिवसीय और 58 टी20 खेले हैं। उन्होंने 2002 में अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में डेब्यू किया था और 14 साल क्रिकेट खेलने के बाद 2016 में खेल से संन्यास ले लिया था। वॉटसन का एकदिवसीय और टी20 में प्रदर्शन शानदार रहा है। वह एकदिवसीय में ऑस्ट्रेलिया के लिए सबसे बड़ी पारी खेलने वाले बल्लेबाज हैं. उन्होंने अप्रैल 2011 में बांग्लादेश के खिलाफ 185 रन बनाए थे। वह साल 2012 के टी20 विश्व कप में प्लेयर ऑफ द टूर्नामेंट भी थे। वॉटसन लंबे वक्त तक आईपीएल में भी शामिल रहे हैं। उन्होंने लीग की शुरुआत राजस्थान रॉयल्स के साथ की और 2008 में खिताब जीतने वाली राजस्थान टीम के सदस्य रहे। इसके बाद

उन्होंने चेन्नई सुपर किंग्स से खेला। इस टीम के साथ भी उनका प्रदर्शन शानदार रहा। उन्होंने 2018 के आईपीएल फाइनल में 57 गेंद में 117 रन की मैच विजेता पारी खेली थी।

नेपाल बोर्ड के साथ मिलकर फ्रेंडशिप टी20 लीग का आयोजन करेगा बीसीसीआई

नई दिल्ली । भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) आगामी टी20 विश्व कप से पहले नेपाल क्रिकेट बोर्ड के साथ मिलकर फ्रेंडशिप कप नाम से एक टी20 लीग का आयोजन करेगा। इसका लक्ष्य नेपाल की टी को विश्वकप की तैयारी में सहायता करना है। इस दौरान नेपाल की टीम बड़ौदा क्रिकेट एसोसिएशन और गुजरात क्रिकेट एसोसिएशन के साथ एक त्रिकोणीय क्रिकेट सीरीज खेलेगी। यह ट्राई-सीरीज़ 31 मार्च को शुरू होने के बाद 7 अप्रैल को समाप्त होगी। फ्रेंडशिप कप को एक वार्षिक आयोजन बनाने का भी प्रस्ताव है, जो क्रिकेट समुदाय के भीतर दोस्ती और खेल भावना को बढ़ावा देगा। बीसीसीआई की इस पहल से आगामी आगामी टी20 विश्व कप के लिए नेपाल के क्रिकेटरों को सहायता मिलेगी। विश्वकप जून 2024 में अमेरिका और वेस्टइंडीज में खेला जाएगा। नेपाल ने पहले ही इस टूर्नामेंट के लिए क्वालीफाई कर लिया है। उसे डलास में अपने शुरुआती मुकाबले में नीदरलैंड से खेलना है। फ्रेंडशिप कप टी20 ट्राई-सीरीज नेपाल राष्ट्रीय क्रिकेट टीम के लिए अपने कौशल को बढ़ाने और बीसीसीआई की राज्य टीमों के खिलाफ बेहतर प्रदर्शन हासिल करने का एक मंच भी प्रदान करेगी।

सुरत भुमि, सूरत। नवागांव शिव साईं नगर ताड़केश्वर महादेव मंदिर शिवरात्रि महोत्सव का आयोजन किया गया था। इस अवसर पर सुंदरकांड पाठ का आयोजन किया गया था। मुख्य अतिथि बांधकाम समिति के अध्यक्ष भाईदास पाटील, शिक्षण समिति के सभ्य शुभम उपाध्याय, डॉक्टर कमलेश मिश्रा, उद्योगपति उमेश तिवारी, सूरत भूमि के संपादक संजय मिश्रा, गायक ओमप्रकाश दुबे, सुनील पांडे, संजय तिवारी, नवनीत पांडे एवं वार्ड नंबर 27 डिंडोली दक्षिण के महामंत्री शंकर भाई दुबे उपस्थित होकर भगवान भोलेनाथ का आर्शिवाद प्राप्त किया। आयोजक प्रमोद दुबे, मंतोष दुबे प्रशांत तिवारी तथा तमाम मित्रगण द्वारा आए हूए सभी मेहमानों का स्वागत किया गया।

सूरत में लिंबायत के रतनजी नगर में स्थानीय लोगों का आरोप है कि भूमाफियाओं ने सोसायटी के आने-जाने की जगह पर अवैध कब्जा करने की कोशिश की और झूठे दस्तावेज बनाए?

અરજદાર :-
રતનજી નગરના રહીશો
ઠે. રતનજી નગર,
જંગલ શાહ બાવાની દરગાહ પાસે,
અમીના મસ્જીદની પાછળ,
લિંબાયત, સુરત
તા. :

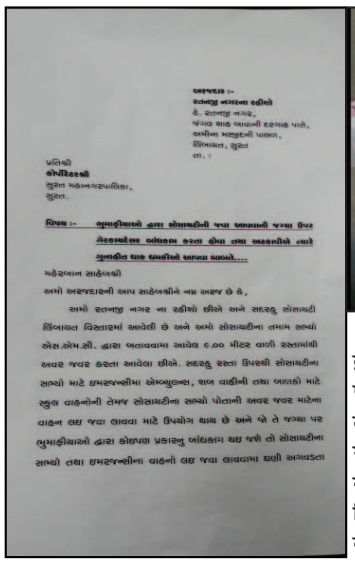

પ્રતિશ્રી
કોર્પોરેટરશ્રી
સુરત મહાનગરપાલિકા,
સુરત.

વિષય :- ભુમાફીયાઓ દ્વારા સોસાયટીની જવા આવવાની જગ્યા ઉપર ગેરકાયદેસર બાંધકામ કરતા હોવા તથા અટકાવીએ ત્યારે ગુનાહીત ધાક ધમકીઓ આપવા બાબતે....

મહેરબાન સાહેબશ્રી

અમો અરજદારની આપ સાહેબશ્રીને નમ્ર અરજ છે કે,

અમો રતનજી નગર ના રહીશો છીએ અને સદરહુ સોસાયટી લિંબાયત વિસ્તારમાં આવેલી છે અને અમો સોસાયટીના તમામ સભ્યો એસ.એમ.સી. દ્વારા બતાવવામા આવેલ ૯.૦૦ મીટર વાળી રસ્તામાંથી અવર જવર કરતા આવેલા છીએ. સદરહુ રસ્તા ઉપરથી સોસાયટીના સભ્યો માટે ઇમરજન્સીમા એમ્બ્યુલન્સ, શબ વાહીની તથા બાળકો માટે સ્કુલ વાહનોની તેમજ સોસાયટીના સભ્યો પોતાની અવર જવર માટેના વાહન લઇ જવા લાવવા માટે ઉપયોગ થાય છે અને જો તે જગ્યા પર ભુમાફીયાઓ દ્વારા કોઇપણ પ્રકારનુ બાંધકામ થઇ જશે તો સોસાયટીના સભ્યો તથા ઇમરજન્સીના વાહનો લઇ જવા લાવવામા ઘણી અગવડતા

सुरत भुमि, सूरत में लिंबायत के रतनजी नगर में लिंबायत जोन में भूमाफियाओं द्वारा सोसायटी परिसर पर अवैध कब्जा किया गया, जब स्थानीय लोगों ने सड़क पर अवैध कब्जा रोकने के लिए जमीन मालिक और एसएमसी को आवेदन दिया, तो बिल्डर ने आपराधिक धमकी दी यह उस समय चर्चा का विषय बन गया जब रतनजी नगर के निवासी जमीन मालिक विनोद भाई पाटिल से मिलने गए और उन्हें वहां बुलाया गया। लोगों ने आरोप लगाया कि जमीन मालिक ने लोगों को बताया कि यह जमीन किसी को बेची नहीं गयी है और न ही स्थानीय लोगों को आश्वस्त करने के लिए कोई कागजात पेश किया गया है कि यह सोसायटी की जगह है।

आठ पहर पूजा एवं भजन संध्या का हुआ आयोजन

सुरत भुमि, सूरत। श्री श्याम मंदिर सूरतधाम में शिवरात्रि के उपलक्ष में आठ पहर पूजा एवं भजन संध्या का आयोजन किया गया। इस मौक़े पर शंकर भगवान सहित बाबा श्याम का भव्य श्रृंगार किया गया। शाम सात बजे से भजन संध्या का आयोजन किया गया। भजन संध्या में स्थानीय गायक कलाकार अजय-विजय द्वारा प्रस्तुति दी गई। आयोजन में शाम की ठंडाई प्रसाद का वितरण भी किया गया। शिवरात्रि के मौक़े पर आठ पहर पूजा का आयोजन भी किया गया। इस मौक़े पर सैंकड़ों भक्त उपस्थित रहें।

आर्सेलरमित्तल निप्पोन स्टील इंडिया ने 'बेटी पढ़ाओ' छात्रवृत्ति पहल को आगे बढ़ाने के लिए प्रोटेईन के साथ साझेदारी को नवीकृत किया

सूरत - हजीरा ।

आर्सेलरमित्तल और निप्पॉन स्टील के संयुक्त उद्यम, आर्सेलरमित्तल निप्पॉन स्टील इंडिया (AM/NS India), ने भारत के डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर में अग्रणी प्रोटेईन ईगॉव टेक्नोलॉजीज के साथ अपने सहयोग को नवीकृत करके शिक्षा में लैंगिक समानता को गति देने की अपनी प्रतिबद्धता को मजबूत किया है। पूरे भारत में 'बेटी पढ़ाओ' (बेटियों को शिक्षित करें) छात्रवृत्ति पहल को आगे बढ़ाने के लिए मुंबई में प्रोटेईन के मुख्यालय में गुरुवार (7 मार्च) को एक समझौता ज्ञापन (रूथ) पर हस्ताक्षर किए गए।

AM/NS India द्वारा मार्च-2022 में शुरू की गई 'बेटी पढ़ाओज छात्रवृत्ति पहल ने अब तक छत्तीसगढ़, गुजरात, महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश और ओडिशा राज्यों की लगभग 650 वंचित युवा महिलाओं को सकारात्मक रूप से प्रभावित किया है।

इस समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर समारोह में AM/NS India के मानव संसाधन और प्रशासन के उप निदेशक श्री केजी कुबोटा और छ्स्क्र के प्रमुख डॉ. विकास यादवेंदु सहित अनेक अग्रणी तथा प्रोटेईन ईगोव के अग्रणी श्री जयेश सुले, डब्ल्यूटीडी और सीओओ शामिल सहित अन्य उप-स्थत रहे थे।

AM/NS India इस पहल के माध्यम से वंचित महिलाओं को वित्तीय सहायता प्रदान करने का प्रयास करता है, जो इस वर्ष की अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस की थीम 'इंस्पायर इंक्लूजन' के अनुरूप है। इस पहल के माध्यम से देशभर में छात्रों को योग्य और पात्रता मानदंडों के अधीन, तकनीकी, चिकित्सा और व्यावसायिक कार्यक्रमों, स्नातक शिक्षा, साथ ही राष्ट्रीय और राज्य खेलों के कोर्स सहित विविध शैक्षणिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए छात्रवृत्ति के लिए आवेदन करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

केइजी कुबोटा, उप निदेशक - मानव संसाधन और प्रशासन विभाग, AM/NS India ने कहा कि, "हमारी च्बेटी पढ़ाओज छात्रवृत्ति वंचित छात्राओंको उनकी व्यक्तिगत और व्यावसायिक आकांक्षाओं को प्राप्त करने में सहायता करके एक सार्थक अंतर लाती है, जिससे सर्वसमावेशी विकास को बढ़ावा मिलता है। उच्च उपलब्धि हांसिल करने वाली युवा महिलाओं के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुंच बढ़ाने से हमारे देश के शिक्षा क्षेत्र में लैंगिक पूर्वाग्रह के उन्मूलन के उद्देश्य में बहुत योगदान मिलेगा। यह पहल 'स्मार्टर स्टील्स, ब्राइटर फ्यूचर्स' बनाने की हमारी प्रतिबद्धता को मजबूत करती है।"

सुबा ग्रुप ऑफ होटल्स ने सूरत शहर में "क्लिक होटल" लॉन्च किया

क्लिक होटल, मुंद्रा को हाल ही में फरवरी 2024 में लॉन्च किया गया था, जो गुजरात में SUBA ग्रुप ऑफ होटल्स के बढ़ते फोकस को दर्शाता है

सूरत । सूबा ग्रुप ऑफ होटल्स ने सूरत, गुजरात में क्लिक होटल युवराज के लॉन्च के साथ एक और उपलब्धि हासिल कर ली है। सूरत को भारत के प्रमुख आर्थिक केंद्रों में से एक माना जाता है। होटल से लगभग 30 मिनट की दूरी परसूरत अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा स्थित है और यहां सड़क, रेल और हवाई मार्ग द्वारा आसानी से पहुंचा जा सकता है। अपने चमकदार हीरे और कपड़ा बाजार के लिए मशहूर सूरत शहर में पूरी दुनिया के लगभग 90% हीरे की पॉलिशिंग और कटिंग की जाती है। इसके अतिरिक्त, यह घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय खपत के लिए परिधान और सहायक उपकरण के लिए एक प्रमुख आपूर्ति केंद्र के रूप में भी कार्य करता है।

इस हॉटेल के उद्घाटन की घोषणा करते हुए, सूबा ग्रुप ऑफ होटल्स के प्रबंध निदेशक मंसूर मेहता और सीईओ मुबीन मेहता ने एक संयुक्त बयान में कहा, - "हमें सूरत में क्लिक होटल लॉन्च करते हुए खुशी हो रही है। पिछले 2 महीनों में गुजरात में यह हमारा दूसरा लॉन्च है और यह गुजरात और पूरे भारत में सभी का पसंदीदा हॉटेल समूह होने के हमारे दृष्टिकोण का एक प्रमाण है। क्लिक होटल युवराज, सूरत हमारे मौजूदा ग्राहकों को अपनापन बेहतर सुविधायुक्त वातावरण और हमारे नए मेहमानों को ताजगी प्रदान करेगा। बेहतर गुणवत्ता के साथ क्लिक होटल में आप को मिलेगा आरामदायक वातावरण, भोजन और हाई स्पीड ब्रॉडबैंड (वाईफ़ाई) के साथ बेदाग सेवा। इसके साथ ही अंतरराष्ट्रीय मानकों के अद्वितीय आतिथ्य का पूरी तरह से प्रतीक, क्लिक होटल युवराज, सूरत उच्च गुणवत्ता के मानक के रूप में कार्य करेगा। भारत में गहरी जड़ें जमा चुके एक संगठन के रूप में, हम स्थिरता और पर्यावरण की सुरक्षा के लिए भी प्रतिबद्ध हैं। स्थिरता हमारे लिए आदर्श है और उस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए, हम अपने मेहमानों को जब भी संभव हो लिनन का पुन- उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं, साथ ही कांच की पानी की बोतलों के उपयोग के माध्यम से प्लास्टिक की खपत को भी कम करते हैं।

क्लिक होटल, सूरत एक स्मार्ट सस्टेनेबल किफायती लक्जरी होटल है। यह एक सुंदर, बजट के अनुकूल लेकिन शानदार, पूर्ण-सेवा वाला बिजनेस होटल है जिसे सभी उम्र के व्यापारियों और अवकाश यात्रियों की जरूरतों को पूरा करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। होटल में 2 प्रकार के 54 समकालीन कमरे हैं, यानी किंग/क्वीन और ट्विन कमरे, जिसमें एक इनहाउस बहु-व्यंजन रेस्तरां - CINNAMON और 3 बैंकेट वेन्यू शामिल हैं। मेहमानों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए, यह होटल कुशल सेवा और अतिथि सुविधाओं की एक विस्तृत श्रृंखला के साथ-साथ इन-रूम डाइनिंग भी प्रदान करता है।

चार पहर की पूजा का हुआ आयोजन

सुरत भुमि, सूरत। वेसू स्थित केपिटल ग्रीन सोसायटी में शिवरात्रि के मौक़े पर चार पहर पूजा का आयोजन किया गया। इस मौक़े पर भगवान शंकर का अभिषेक किया गया। आयोजन में सोसायटी के अनेकों लोग उपस्थित रहें।

सैमसंग ने बेंगलुरु में अपने रिटेल कारोबार का विस्तार किया

बेंगलुरु । भारत की सबसे बड़ी उपभोक्ता इलेक्ट्रॉनिक्स कंपनी सैमसंग ने बेंगलुरु के मॉल ऑफ एशिया में एक और नए प्रीमियम एक्सपीरियंस स्टोर का उद्घाटन किया है। बिक्री और सेवा के लिए वन-स्टॉप शॉप के रूप में डिज़ाइन किया गया यह स्टोर उपभोक्ताओं को शानदार अनुभव प्रदान करेगा, जिसमें इसके कनेक्टेड डिवाइस इकोसिस्टम - सैमसंग स्मार्टथिंग्स - का प्रदर्शन भी शामिल है। यहां विभिन्न प्रकार की आकर्षक गतिविधियों का आयोजन भी किया जाएगा।

मॉल ऑफ एशिया में 1200 वर्ग फुट में फैला नया प्रीमियम एक्सपीरियंस स्टोर सैमसंग उत्पादों और सेवाओं की व्यापक रेंज पेश करते हुए बेंगलुरु के उत्तरी हिस्सों में ग्राहकों की जरूरतों को पूरा करेगा।

स्टोर में आने वाले उपभोक्ताओं को सीमित अवधि के ऑफर के तौर पर चुनिंदा गैलेक्सी उपकरणों के साथ निश्चित उपहार, 2X लॉयल्टी पॉइंट (15000 रुपये से ऊपर के सभी लेनदेन पर) और 2999 रुपये में गैलेक्सी बड्स एफई मिलेगा। 20000 रुपये मूल्य के सैमसंग उत्पादों की खरीद पर, पहले 200 ग्राहकों को शुरुआती उपहार मिलेंगे। इसके अलावा, उपभोक्ता हमेशा विशेष लाभ भी प्राप्त कर सकते हैं। इसमें स्मार्टफोन, लैपटॉप और स्मार्ट घड़ियों पर 10% तक की स्टूडेंट छूट, 22.5% कैशबैक और चुनिंदा वस्तुओं पर 22000 रुपये का अतिरिक्त फायदा जैसे लाभ शामिल हैं।

सुमित वालिया, उपाध्यक्ष, डी2सी बिजनेस, सैमसंग इंडिया ने कहा "शहर में हमारे प्रमुख सेंटर सैमसंग ओपेरा हाउस को मिले छह साल के शानदार रिस्पांस के बाद हमें मॉल ऑफ एशिया, बेंगलुरु में एक और प्रीमियम एक्सपीरियंस स्टोर शुरू करने की खुशी है। हमारा लक्ष्य स्थानीय खरीदारों को व्यापक और विशिष्ट रूप से तैयार किए गए प्रीमियम उत्पादों की ओर आकर्षित करना है। हमारा नवीनतम स्टोर उत्पादकता मास्टरक्लास, पोर्ट्रेट फोटोग्राफी, नाइटोग्राफी और फोटो संपादन सेशन सहित 'लर्न @ सैमसंग' कार्यशालाओं की मेजबानी करके बेंगलुरु के विविधता भरे उपभोक्ता आधार को शामिल करने के लिए समर्पित है, जो अलग-अलग लोगों की पसंद को पूरा करता है। शहर का लगातार बदलता खुदरा बाजार हमें अपने उपभोक्ताओं से जुड़ने और यादगार संबंध विकसित करने के लिए एक आदर्श पृष्ठभूमि प्रदान करता हैं"।

ओला इलेक्ट्रिक ने दी नई सौगात 31 मार्च तक अपने एस1 पोर्टफोलियो की कीमत को 25,000 रुपये तक घटाया

अब ओला एस1 चाहने वालों के लिए उनकी इच्छा पूरी करने का समय आ गया है, क्योंकि एफएएमई (फास्टर एडॉप्शन एंड मैन्युफैक्चरिंग ऑफ इलेक्ट्रिक व्हीकल्स) योजना 31 मार्च 2024 को समाप्त होने की संभावना है और ईवी की कीमतों में बड़ा बदलाव हो सकता है। एक आकर्षक कीमत वाले उत्पाद पोर्टफोलियो के साथ ओला एस1 स्कूटर किसी भी पारंपरिक आईसीई वाहन से बेहतर परफॉर्मेंस देता है। इसी वजह से यह स्कूटर हर साल लगभग 30,000 रुपये तक की बचत के साथ बाजार में बेहतर विकल्प बन जाता है।

हाल ही में, ओला इलेक्ट्रिक ऑटोमोबाइल और ऑटो कंपोनेंट उद्योग में प्रोडक्शन लिंक्ड इंसेंटिव (पीएलआई) योजना के तहत घरेलू मूल्य संवर्धन (डीवीए) प्रमाणपत्र हासिल करने वाली पहली भारतीय 2व्हीलर कंपनी बन गई है। पीएलआई प्रमाणन कंपनी की वर्टिकली एकीकृत विनिर्माण क्षमताओं का सबूत है, जिसने इसकी मजबूत स्थानीयकृत आपूर्ति श्रृंखला इकोसिस्टम और सरकारी सब्सिडी के साथ मिलकर कंपनी को कीमतों को दुबारा तय करने में मदद की है।

ओला इलेक्ट्रिक ने हाल ही में ईवी को अपनाने में आने वाली सभी बाधाओं को दूर करने की कोशिश में उत्पादों, सेवा, चार्जिंग नेटवर्क और बैटरी वारंटी आदि से जुड़ी कई पहलों की घोषणा की है।

एस 1 एक्स (4किलोवॉट घंटा) के लॉन्च के साथ - साथ ओला इलेक्ट्रिक ने अपने पोर्टफोलियो को छह सर्वश्रेष्ठ श्रेणी के उत्पादों तक बढ़ाया है, जो अलग-अलग कीमतों पर अलग-अलग रेंज की ग्राहकों की ज़रूरतों को पूरा करती हैं।

कंपनी ने बिना किसी अतिरिक्त लागत के उत्पादों की पूरी श्रृंखला के लिए उद्योग में पहली बार 8 साल/80,000 किलोमीटर की विस्तारित बैटरी वारंटी भी लॉन्च करी है। यह एक ऐसा कदम है, जो वाहनों के जीवनकाल को आईसीई वाहनों के मुकाबले 2एक्स बढ़ा देगा। ईवी अपनाने के लिए सबसे बड़ी बाधा को ध्यान में रख कर यह कदम उठाया गया है। इसके अलावा ओला इलेक्ट्रिक ने अप्रैल 2024 तक देश भर में अपने सेवा नेटवर्क को मौजूदा 414 सेवा केंद्रों से 600 केंद्रों तक 50% तक बढ़ाने की योजना का भी खुलासा किया है।

स्वात्वाधिकारी, प्रकाशक, सम्पादकः संजय रमाशंकर मिश्रा द्वारा ११४, न्यू प्रियंका टाउनशीप अपार्टमेन्ट, डिंडोली, उधना, सुरत (गुजरात) प्रिन्टर्स- भूनेश्वरा प्रिन्टर्स, प्लाट नं. 29, परमानन्द इण्डस्ट्रीयल सोसायटी, चौकसी मील के पास, उधना मगदल्ला रोड़ (गुजरात) से मुद्रित एवं ११४, न्यू प्रियंका टाउनशीप अपार्टमेन्ट, डिंडोली, उधना, सूरत (गुजरात) से प्रकाशित। कार्यालय फोनः 0261-2274271, (न्यायिक क्षेत्र सूरत रहेगा)